युवाओं के शौर्य, शक्ति एवं साहस का परिचायक

Reg. No. CHHHIN/2010/44000

युवा मत

हिन्दी मासिक पत्रिका

माह सितम्बर 2021 अंक - 9 वर्ष - 12 मूल्य - 20 रूपये

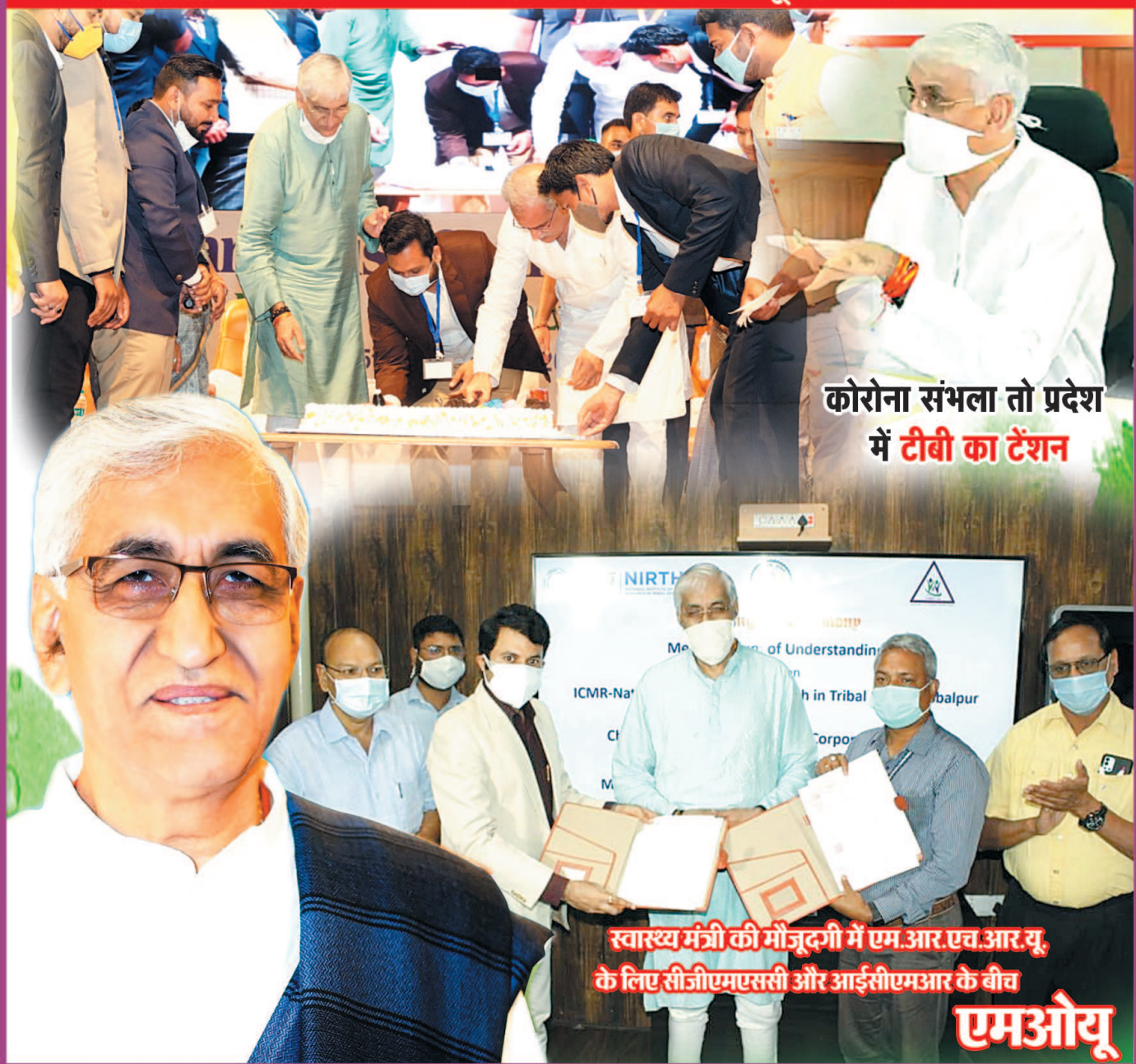

कोरोना संभला तो प्रदेश में टीबी का टेंशन

स्वास्थ्य मंत्री की मौजूदगी में एम.आर.एच.आर.यू. के लिए सीजीएमएससी और आईसीएमआर के बीच

एमओयू

पिरियड्स (माहवारी) की समस्याओं से कैसे बचें

प्रश्न 1. पीरियड्स (माहवारी) क्या है ?

उत्तर : पीरियड्स (माहवारी) वह प्रक्रिया है जिसमें औरत का शरीर एक बच्चे के ठहरने की तैयारी करता है। जब लड़की किशोरावस्था में कदम रखती है तब माहवारी चक्र की शुरूआत होती है। इस प्रक्रिया में रक्त योनिद्वार से महीने में 2 से 7 दिन तक बाहर निकलता है। आमतौर पर बारह से पचास वर्ष तक के बीच की उम्र में हर माह रक्त स्त्राव होता है जिसे माहवारी आना कहा जाता है यह 20 से 35 दिवस के अन्तराल में होता है। पहले अण्डाशय में एक अंडाणु बढ़ने लगता है। अंडाणु के आसपास गुब्बारे की तरह एक थैली भी बढ़ने लगती है इन्हे पुटिका कहते है।

अंडाणु के बढ़ने के समय ही गर्भाशय की अंदरूनी परत मोटी होने लगती है। इसमें ढेर सारी छोटी–छोटी खुन की नलियॉ बनने लगती है ताकि यदि बच्चा ठहरा तो बच्चे तक रक्त पहुच सके अंत में अण्डाणु के आसपास बढ़ रही थैली इतनी बडी हो जाती है कि वह फूट जाती है, अंडाणु अंडाशय से बाहर निकल आता है। अंडाणु किसी एक अंड–वाहिनी की ओर बढ़ता हुआ गर्भाशय में आ जाता है। अगर अंडाणु का बीज से संयोग नही होता है तो वह गर्भाशय में नही ठहरता है तब कुछ दिन के पश्चात वह अस्तर टूट जाता है और योनि से बाहर निकल आता है जिस कारण से माहवारी आती है।

प्रश्न 2. पीरियड्स(माहवारी) के समय सेनेटरी नैपकिन अथवा साफ कपड़े का ही उपयोग करें।

उत्तर : आज कल बाजार में और कुछ के जगह मितानिन के पास भी सेनेटरी नैपकिन उपल्बध रहते है। सेनेटरी नैपकिन किशोरी के लिए माहवारी से निपटना आसान बनाते है। किशोरी के स्वास्थ्य को महत्व देते हुए परिवार कों अपनी आर्थिक क्षमता अनुसार किशोरियों को सेनेटरी नैपकिन दिलाना चाहिए। जहॉ किशोरी के लिए सेनेटरी नैपकिन खरीदना संभव ना हो वहा सूती कपडा उपयोग कर सकते हैं। साफ व सुखा सूती कपडा ही उपयोग करें इसमें खुजली की शिकायत नही होती है। सूती कपडे में गीलापन सोखने कि क्षमता अधिक होती है। एक दिन में दो या ज्यादा बार जरूरत के आधार पर बदलें इससे गीलापन अधिक देर तक नही होता है

प्रश्न 3. पीरियड्स(माहवारी) के समय ऐठन या मरोड़ के कारण दर्द क्यों होता है ?

उत्तर : आधे से अधिक महिलाओं को पीरियड्स के दौरान दर्द की शिकायत रहती है, जिसे डिसमेनोरिया भी कहा जाता है। ऐसा गर्भाशय में हार्मोंस प्रास्टाग्लैन्डिन रसायन अधिक मात्रा में बनने के कारण होता है। यह रसायन गर्भाशय में से मृत एंडोमेट्रियल टीशू को शरीर से बाहर निकालने में मदद करता है। कुल महिलाओं के गर्भाशय मं प्रास्टाग्लैडिन हार्मोंस ज्यादा बनता है या ज्यादा संवेदनशील होता है। जिसकी वजह से ज्यादा ऐंठन और दर्द होता है। ज्यादा तकलीफ होने पर स्त्री रोग विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए। यदि कष्ट बहुत ज्यादा न हो तो आयरन टॉनिक, संतुलित आहार, स्वच्छ हवा व उचित व्यायाम द्वारा इसे ठीक किया जा सकता है। पीरियड्स के दौरान होने वाले दर्द से बचने के लिये कपड़े या पैड को हल्का गर्म कर पेट के निचले हिस्से, नाभि के नीचे रखने से मांसपेशियों को आराम मिलेगा। इसके अलावा सरसो के तेल से हाथ की उंगलियों से पेट के निचले हिस्से की हल्के हाथों से मालिश करने से भी आराम मिलेगा। लेटते समय पैरों के नीचे तकिया रखना फायदेमंद रहेगा, वहीं मेडीटेशन, योग जैसी क्रियाएं करने से आराम मिलेगा। गर्म पानी से नहाएं या फिर जहां मरोड़ है वहां गर्म पानी से हल्की सिंकाई कर सकते हैं। पीरियड्स के दौरान भी नियमित रूप से पैदल चलना चाहिए और व्यायाम करना चाहिए।

प्रश्न 4. पीरियड्स(माहवारी) के दौरान होने वाले दर्द से बचाव के लिये अपने खान–पान में क्या बदलाव करें?

उत्तर : खाना हल्का हो, इसे एक साथ खाने के बजाये हिस्सों में कई बार खाया जा सकता है। प्रोटीन युक्त और गैस बनाने वाले खाद्य पदार्थ पीरियड्स के पहले और पीरियड्स के दौरान लेने से बचना चाहिए। यह पेट में भारीपन और बैचेनी को बढ़ा देते हैं। खाने में गुड़ कार्ब्स जैसे अनाज, फल और सब्जियों का सेवन करना चाहिए मगर नमक और शक्कर का सेवन कम करना फायदेमंद रहेगा। गर्म पेय पदार्थ जैसे सूप का सेवन करना उचित है, किन्तु कॉफी व चाय लेने से बचना चाहिए। पीरियड्स के दौरान ओमेगा 3 एसिड युक्त फैटी फिश, नट्स अलसी जैसे अन्य खाद्य पदार्थों को खाने में शामिल करना चाहिए।

सौजन्य :– सरगुजा साइंस ग्रुप एज्युकेशन सोसायटी, अम्बिकापुर

Project
A women's empowered programme

युवा मत
(मासिक पत्रिका)

वर्ष-12, अंक- 9, सितंबर 2021

Reg. No. CHHHIN/2010/44000

प्रधान संपादक

अंचल ओझा

संपादक

पुनीत शुक्ला

उप संपादक

एम.पी.गुप्ता

कम्पोजिंग/डिजाईन

अरविन्द मसखरे

फोटोग्राफी

स्टुडियो मार्डन बबलु भाई

विज्ञापन प्रमुख संदीप वर्मा

अमित दुबे

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक अंचल ओझा द्वारा श्री सांई बाबा ऑफसेट प्रेस, चित्रमंदिर गली, अम्बिकापुर, सरगुजा से मुद्रित तथा महुआपारा (वार्ड-2), अम्बिकापुर, सरगुजा (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- अंचल ओझा, मो. 9165935983

पत्र व्यवहार का पता:-

श्री सांई बाबा ऑफसेट प्रेस, चित्र मंदिर गली, अदिती ब्यूटी पार्लर काम्पलेक्स, अम्बिकापुर, सरगुजा (छ.ग.) 497001

E-mail

surgujasciencegroup@gmail.com

anchallambikapur@gmail.com

Mo. 9425256089

आप अपने विचार से हमें उपरोक्त पते पर सूचित करें।

युवाओं के शौर्य एवं साहस का परिचायक

अंदर के पृष्ठों पर

1.	संपादकीय	4
2.	बस्तर अंचल में जहां स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम ...	5
3.	टीबी जांच खोज में मिले 634 संभावित मरीज	6
4.	आयुष्मान दिवस पर बांटे गए 510 कार्ड	7
5.	विभिन्न बीमारियों के कारण हुई है पंडो जनजाति के ...	8
6.	स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव की अध्यक्षता में चन्दूलाल ...	9
7	खाली पड़ी खदानों पर मानव निर्मित ...	11
8.	माहवारी स्वच्छता प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न	12
9.	पड़ोसी देशों के खिलाफ प्रदर्शन पर नेपाल सरकार सख्त ...	14
10.	अयोध्या अपराजेय, बापू ने भी भारत में	15
11.	छुआछूत का भेदभाव खत्म करने वाले माधवन....	18
12.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक साल	21
13.	छत्तीसगढ़ सरकार वनौषधियों से जुड़े उद्योगों की स्थापना	22
15.	राजकीय सम्मान के साथ स्व.युद्धवीर सिंह ...	23
16	कोरोना संभला तो प्रदेश में टीबी का टेंशन	24

सदस्यता प्रपत्र

एक प्रति- 20 रु.	**वार्षिक -200 रु.**
द्विवार्षिक- 350 रु.	**आजीवन- 1500 रु.**

यदि आप भी बनना चाहते है युवा मत के वाषिक /द्विवार्षिक /आजीवन सदस्य तो आज ही इस प्रपत्र को नीचे दर्शाए फार्मेट में भरकर भेंजें।

सदस्य का नाम ..... पिता का नाम .....

..... ग्राम..... पो. .....

पूरा पता.....

पिन नं..... मो. .....

पत्र भेजने हेतु ब्यूरो कार्यालय का पता:- चित्र मंदिर गली, आदिती ब्यूटी पार्लर काम्पलेक्स, श्री सांई बाबा आफसेट प्रेस, अम्बिकापुर, सरगुजा (छ.ग.) 497001, मो. 9165935963

कृपया कर के चेक या ड्राफ्ट अंचल ओझा (प्रधान संपादक युवामत) अम्बिकापुर के नाम से भेंजे।

सरगुजा में पुलिसिंग को लेकर जनता में क्यों आक्रोश

सरगुजा जिले में इन दिनों अपराधियों के हौसले बढ़े हुए हैं, इसका कारण लचर पुलिस व्यवस्था हो अथवा अपराधियों पर लगाम लगा पाने में पुलिस की नाकामी कारण चाहे जो भी हो, लेकिन जिस तरह से पिछले साल भर में सरगुजा जिला सहित शहर अम्बिकापुर में अपराधिक वारदात बढ़े हैं, उससे आमजनता काफी परेशान एवं डरी-सहमी सी है। आये दिन कोई न कोई ऐसी वारदात सामने आती है, जिसने लोगों को सोचने पर मजबुर कर दिया है। क्या वाकई में जिले एवं शहर में पुलिसिंग व्यवस्था चुस्त-दुरूस्त है अथवा पुलिस हाथ पर हाथ धरे बैठी है। इस संबंध में आम चर्चा यह भी है कि जब भी पुलिस से इन वारदातों को लेकर बात करते हैं तो वे कहते हैं कि किसी भी मामले में ज्यादा नहीं पड़ना है, किसी को भी शक पर उठा कर ले आयेंगे और उसने कुछ कर ली तो लेने के देने पड़ जाते हैं। ऐसा वह पुलिस कह रही है, जिसने न जाने कितने अपराधियों को पकड़ा है, कितने ही अपराधियों को बचाया भी और न जाने कितने मामलों को थाने तक आने से पहले ही निपटा दिया है। खैर यह पुलिस है अपनी नाकामी का ठिकरा भी आमजनता पर ही फोड़ेगी। पिछले दिनों कोतवाली थाने के चंद फ्लांग की दूरी पर एक ज्वेलरी शॉप पर हुए 60 लाख से अधिक मूल्य के चांदी एवं सोने की ज्वेलरी के चोरी के मामले को पुलिस ने सुलझाने में सफलता तो अर्जित कर ली है, किन्तु दूसरी वारदात ने एक बार फिर से पुलिस की चैन उड़ा दी है। दूसरी वारदात गांधीनगर थाने के नजदिक हुई है, जिसमें दुकान में घुसकर आरोपीयों ने दुकान संचालक के पैकेट से रूपये निकाल लिये, गले से चैन खिंच लिया और मारपीट भी की मामला सीसीटीवी कैमरे में कैद भी है, लेकिन पुलिस उस मामले को सुलझा पाने में अब तक नाकाम है।

अपराधियों के हौसले यहां तक बढ़े हुए हैं कि उनका खौफ खुद उस पुलिस विभाग में भी है जो लोगों की सुरक्षा के लिए है, पहले इसी शहर एवं जिले में पुलिस वाले एक के बाद एक पीटे गये, फिर कुछ पत्रकारों के साथ भी घटना घटी, फिर आम लोग भी निशाने पर रहे, इन सबके साथ साथ चोरी, उठाईगिरी एवं सेंधमारी की वारदात भी लगातार शहर में बढ़ती रही, इस दरमियान संभाग के प्रमुख पुलिस अधिकारी बदले गये, फिर जिले के पुलिस कप्तान बदले गये, फिर एडिशनल एसपी, सीएसपी एवं टी.आई भी बदल कर देखे गए, लेकिन अपराध का सिलसिला इन तबादलों के साथ लगातार बढ़ता ही रहा, मानों अपराधी पुलिस विभाग को चुनौती दे रहें हों कि तबादले करो या बदलों हम अपना काम करते रहेंगे। पिछले कुछ दिनों में हुए वारदातों ने पुलिस का डर, पुलिसिंग एवं पुलिस गश्ती को ठेंगा दिखा दिया है। पहला मामला कोतवाली पुलिस थाने के चंद दूरी पर ज्वेलरी शॉप में हुई सेंधमारी का था तो ठीक उसके कुछ समय बाद गांधीनगर थाना के निकट हुआ मामला है। जिसने यह साफ बता दिया है कि पुलिस सो रही है और अपराधी जाग रहे हैं। थानों के अगल-बगल में घट रही घटनाओं ने आमजनों की नींद हराम कर दी है और इन घटनाओं से पुलिस कितनी जगी, कप्तान ने क्या एक्शन लिया यह तो समय बतायेगा। किन्तु कोतवाली के समीप हुई घटना ने पुलिस की सजगता पर इसलिए सवाल खड़ा किया क्यों कि उस ज्वेलरी शॉप में पूर्व में भी सेंधमारी की कोशिश हो चुकी थी, जिसे पुलिस ने गंभीरता से नहीं लिया था, जिसके कारण तीसरी वारदात में घटना घटित हुई और चोरी भी हुई, भले ही पुलिस मामले का पर्दाफाश कर अपनी पीठ थपथपा रही हो, लेकिन सवाल तो यह है कि आखिरकार दो बार पहले हुई चोरी की कोशिश के समय ही पुलिस सजग क्यों नहीं दिखी।

अम्बिकापुर शहर के गांधीनगर थाना से करीब 100 मीटर की दूरी पर स्थित पूर्णिमा ट्रेडर्स में दो अज्ञात युवकों के द्वारा दुकान में घुसकर संचालक के साथ मारपीट सहित लूट की वारदात को अंजाम दिया गया, जिस मामले में पुलिस अब तक आरोपीयों तक नहीं पहुंच पायी है। इस मामले में लोगों में आक्रोश है। अब यह तो समय बतायेगा की आने वाले समय में शहर में पुलिस आमजनों को कितनी सजगता से सुरक्षा मुहैया करायेगी, या फिर घटनाएं यूँ ही घटती रहेगी और पुलिस विभाग में केवल तबादलों का खेल चलता रहेगा और आम जनता अपराधियों की शिकार बनती रहेगी।

बस्तर अंचल में जहां स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल खुले हैं, वहां बच्चों के लिए हॉस्टल की व्यवस्था की जाएगी: मुख्यमंत्री बघेल

बस्तर/मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा है कि बस्तर अंचल में जहां स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल खुले हैं, वहां बच्चों के लिए हॉस्टल की व्यवस्था भी की जाएगी। मुख्यमंत्री ने निवास कार्यालय में बस्तर से आए सर्व आदिवासी समाज के प्रतिनिधि मंडल से चर्चा कर रहे थे। श्री बघेल के आमंत्रण पर यह प्रतिनिधि मंडल मुख्यमंत्री निवास पहुंचा था। चर्चा के दौरान प्रतिनिधि मंडल में शामिल लोगों ने कहा कि राज्य सरकार ने इंग्लिश मीडियम स्कूल प्रारंभ कर गरीब और आदिवासी परिवारों के बच्चों की शिक्षा के लिए एक अच्छी पहल की है। इन स्कूलों में हॉस्टल खुलने से वहां बच्चों को रहने की भी अच्छी सुविधा हो जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासी समाज की समस्याओं को जानने, राज्य सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति की जानकारी सीधे समाज के लोगों से प्राप्त करने के लिए आज प्रतिनिधिमंडल को आमंत्रित किया गया है। सर्व आदिवासी समाज के प्रतिनिधिमंडल में गोंड, धुरवा, हल्बा, दोरला, मुरिया, माड़िया सहित विभिन्न आदिवासी समाज के प्रतिनिधि शामिल थे। उन्होंने अपनी समस्याओं और उनके निदान, शासन की योजनाओं की मैदानी स्थिति के बारे में खुलकर अपनी बात रखी। प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि बस्तर संभाग के दूरस्थ अंचलों में भी अब शिक्षा, स्वास्थ्य, की अच्छी सुविधाएं मिल रही हैं। पहले अंदरूनी क्षेत्रों में जाने के बारे में लोग सोच भी नहीं सकते थे। लेकिन अब कोंटा, दोरनापाल, जगरगुण्डा, भेज्जी के अंदरूनी क्षेत्रों में लोगों का आना-जाना शुरू हो गया है। अंदरूनी इलाकों में भी लोगों के राशन कार्ड, आधार कार्ड, हेल्थ कार्ड बड़ी संख्या में बने हैं। अभी भी शिविर लगाकर कार्ड बनाए जा रहे हैं। लोगों को वन अधिकार पट्टे का लाभ मिला है। वहीं लघु वनोपजों के संग्रहण और वैल्यू एडिशन से आय, रोजगार के अवसर बढ़े हैं। तेन्दूपत्ता की बढ़ी हुई संग्रहण दर भी लोगों को मिल रही हैं। बड़ी संख्या में सड़क, पुल-पुलिया, भवन निर्माण के कार्य किए गए है और दूरस्थ अंदरूनी इलाके में निर्माण कार्य चल रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को सम्बोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार की यह मंशा है कि आदिवासी अंचलों के लोगों को भी वैसी ही सुविधाएं मिले जैसी सुविधाएं मैदानी अंचल के लोगों को मिल रही हैं। राज्य सरकार आदिवासी अंचलों में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के बेहतर से बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। योजनाओं के क्रियान्वयन, तेजी से किए जा रहे विकास कार्यों और बस्तर अंचल के आदिवासियों सहित सभी वर्गों के लोगों के साथ सीधे संवाद से लोगों का राज्य सरकार के प्रति विश्वास मजबूत हुआ है। बस्तर अंचल के अंदरूनी इलाकों में वर्षों से बंद स्कूल फिर से चालू हुए हैं। राज्य सरकार वन अधिकार सहित आदिवासियों के हितों की रक्षा के लिए सजग है। इस अवसर पर विधानसभा उपाध्यक्ष मनोज मंडावी और उद्योग मंत्री कवासी लखमा ने भी अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर संसदीय सचिव शिशुपाल सोरी, रेखचंद जैन, विधायक चंदन कश्यप, संतराम नेताम, राजमन वेंजाम, विक्रम मंडावी सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

टीबी जांच खोज में मिले 634 संभावित मरीज, अब तक 3 लाख 22 हजार 647 लोगों को घर-घर जाकर देखा गया

अम्बिकापुर । जिले में क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम के तहत अब तक 3 लाख 22 हजार 647 लोगों को घर जाकर देखा गया है जिनमें से 634 लोगों को टीबी के संभावित मरीज के रूप में चिन्हांकित किया गया है। चिन्हांकित लोगों में से 253 लोगों की जांच की गई है। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ शैलेन्द्र गुप्ता ने बताया कि टीबी को जड़ से खत्म करने के लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से 10 सितंबर से घर-घर टीबी रोगी खोज अभियान चलाया जा रहा है। राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत टीबी हारेगा-देश जीतेगा अभियान के तहत प्रचार प्रसार की विभिन्न गतिविधियों का आयोजन 10 सितंबर से 10 अक्टूबर तक किया जाएगा। अभियान के दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम तथा महिला बाल विकास की दीदियों के द्वारा घर-घर जाकर लोगों की स्क्रीनिंग किया जा रहा है और जिनमें लक्षण नजर आ रहा उनकी जांच कराई जा रही है। इसमे कार्यकर्ताओ के द्वारा दीवार लेखन तथा समूह

परिचर्चा के माध्यम से टीबी से सावधान रहने तथा किसी भी प्रकार के लक्षण आने पर तत्काल स्वास्थ्य केंद्र में दिखाने की अपील की जा रही है। उन्होंने बताया कि किसी को खांसी के साथ खून आता हो और शाम को बुखार भी आता हो, सीने में दर्द एवं भूख न लगती हो और वजन घटता हो तो टीबी का लक्षण हो सकता है। ऐसे में रोगी को टीबी की जांच करानी चाहिए। जांच की व्यवस्था सभी सरकारी अस्पतालों में नि:शुल्क उपलब्ध है।

कलेक्टर ने आदर्श गोठान सोहगा व मेण्ड्राकला का किया निरीक्षण

अम्बिकापुर। कलेक्टर संजीव कुमार झा ने अम्बिकापुर जनपद के आदर्श गोठान सोहगा व मेण्ड्राकला निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने सोहगा गोठान में समूह की महिलाओं द्वारा संचालित 3 टीयर मुर्गी पालन केन्द्र में उत्पादित अण्डा खरीदकर अण्डा विक्रय का शुभारंभ किया। उन्होंने समूह की महिलाओं से चर्चा करते हुए मुर्गी पालन एवं बटेर पालन के संबंध में जानकारी ली और इसे फायदेमंद बनाने के लिए जरूरी निर्देश दिए।

कलेक्टर ने सोहगा गोठान में शुरू किए गए क्रायलर मुर्गी पालन, बटेर पालन एवं मशरूम उत्पादन शेड का निरीक्षण किया। उन्होंने मशरूम उत्पादन शेड में चूहों से सुरक्षा हेतु रेट प्रोटेक्शन वाल बनाने के निर्देश दिए। सोहगा गोठान में 250 नग क्रायलर मुर्गी एवं 250 नग बटेर का पालन का पालन किया जा रहा है। कलेक्टर ने उद्यान विभाग के अधिकारियों को फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए गोठान में खाली जमीन पर कलकतिया गेंदा लगाने के निर्देश दिए इसके साथ ही इंटरक्रॉपिंग अंतर्गत गोभी और मूली लगाने कहा। कलेक्टर ने गोबर खरीदी एवं वर्मी कम्पोस्ट निर्माण का निरीक्षण करते हुए खरीदी पंजी का अवलोकन किया। उन्होंने दोनों गोठान में गोबर खरीदी सतत् रुप से जारी रखने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने रीपा के अंतर्गत औद्योगिक इकाई निर्माण कार्य में तेजी लाकर शीघ्रता पूरा करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही समूह की महिलाओं के लिए बैठक व्यवस्था हेतु शेड निर्माण कराने अधिकारियों को निर्देशित किए। इस दौरान उप संचालक उद्यान केएस पैकरा, पशु चिकित्सक डॉ. सीके मिश्रा, डीपीएम राहुल मिश्रा, वैज्ञानिक डॉ. प्रशांत शर्मा सहित कृषि एवं उद्यान विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थे।

आयुष्मान दिवस पर बांटे गए 510 कार्ड

अम्बिकापुर। आयुष्मान भारत दिवस के अवसर पर गुरुवार को जिले 510 हितग्राहियों को आयुष्मान कार्ड वितरित किया गया। सभी स्वास्थ्य केन्द्रों में आयुष्मान भारत दिवस मनाया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ पी.एस. सिसोदिया ने बताया कि जिले में पंजीकृत कुल 52 शासकीय एवं निजी अस्पतालों में ओ0पी0डी0 एंव आई0पी0डी0 के हितग्राहियों का आयुष्मान कार्ड बनाकर वितरण किया गया। जिले में 255 आयुष्मान मित्र, च्वाईस सेंटर एंव वी0एल0ई0 के द्वारा ग्राम स्तर पर कार्ड बनाया एंव वितरण का कार्य किया जा रहा है। अभी तक कुल 4 लाख 48 हजार 953 हितग्राहियों का आयुष्मान कार्ड बनाया जा चुका है। डॉ खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना आयुष्मान भारत योजना के तहत 48765 स्वास्थ्य लाभ ले चुके हैं। बी0पी0एल0 परिवारों को 05 लाख एंव ए0पी0एल परिवारों को 50 हजार तक का कार्ड बनावा कर डॉ खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना आयुष्मान भारत से नगद रहित उपचार लाभ लिया जा सकता है। मुख्यमंत्री विशेष सहायता योजना के तहत 20 लाख तक का स्वास्थ्य सहायता का प्रावधान है। राशन कार्ड एवं आधार कार्ड लेकर नजदीकी पंजीकृत शासकीय , निजी अस्पतालों व च्वाइस सेन्टरों में जाकर निशुल्क आयुष्मान भारत कार्ड बनवा कर योजना का लाभ प्राप्त कर सकते है।

स्वास्थ्य मंत्री टी.एस. सिंहदेव ने छत्तीसगढ़ इंस्टिट्यूट ऑफमेडिकल साइंस कॉलेज की समीक्षा की

सिम्स कर्मचारियों की मांग को लेकर किया विचार-विमर्श

रायपुर। स्वास्थ एवं परिवार कल्याण मंत्री टी.एस. सिंहदेव ने छत्तीसगढ़ इंस्टीट्यूट ऑफमेडिकल साइंस कॉलेज (सिम्स) बिलासपुर में तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग कर्मचारियों द्वारा किए जा रहे हड़ताल के संबंध में अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में सिम्स कर्मचारियों की नियुक्ति एवं मांग को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई।

उल्लेखनीय है कि पिछली सरकार में सिम्स में तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग कर्मचारियों की नियुक्ति हुई थी जिसमें कुछ अभ्यर्थियों की नियुक्ति में अनियमितता को लेकर शिकायतें प्राप्त हुई थीं। जिसकी जांच के लिए पिछली सरकार द्वारा ही समिति का गठन किया गया था। समिति की जांच आने के बाद स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने आज अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में जांच रिपोर्ट के बाद उचित निर्णय लिये जाने के संबंध में चर्चा की गई। बैठक में बिलासपुर शहर विधायक शैलेष पाण्डे भी उपस्थित रहे।

विभिन्न बीमारियों के कारण हुई है पंडो जनजाति के व्यक्तियों की मृत्यु

NATIONAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

क्षेत्र में स्वास्थ्य शिविर एवं जागरूकता अभियान संचालित किए जा रहे

रायपुर/बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के रामचन्द्रपुर विकासखंड में विभिन्न बीमारियों से पीड़ित होने के कारण पिछले छह महीनों में पंडो जनजाति के 20 व्यक्तियों की मृत्यु हुई है। जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि इनमें से 60 वर्ष से 80 वर्ष की आयु के छह बुजुर्गों की मृत्यु लकवा एवं अन्य बीमारियों से लंबे समय तक पीड़ित रहने के कारण हुई है। लिवर संबंधी बीमारियों के कारण चार, हृदयाघात से तीन और निमोनिया ग्रस्त दो लोगों की मृत्यु हुई है। इस दौरान कोरोना संक्रमित एक और अत्यधिक शराब सेवन के कारण झटका आने से एक व्यक्ति की मृत्यु हुई है।

बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि अधिकांश मृतकों को स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, जिला चिकित्सालय एवं अम्बिकापुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में उपचार उपलब्ध कराया गया था। इनमें से कुछ मरीजों की उपचार के दौरान अस्पताल में मृत्यु हुई है। भारत में मृत्यु की औसत दर 8.6 प्रति हजार है। क्षेत्र में हुई इन मृत्यु की दर लगभग राष्ट्रीय औसत सीमा के भीतर है। आंकलन करने पर यह पाया गया कि इन जनजातियों में खान-पान में लापरवाही, अत्यधिक शराब सेवन तथा चिकित्सकीय सलाह न मानकर नीम-हकीम एवं झाड़-फूंक पर विश्वास की प्रवृत्ति देखी गई है। ये भी मृत्यु के संभावित कारण हो सकते हैं।

पिछले दो वर्षों में सभी स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि हुई है। इसके तहत 24 उप स्वास्थ्य केन्द्रों एवं चार

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का हेल्थ एण्ड वेलनेस सेंटर में उन्नयन किया गया है। प्रत्येक उप स्वास्थ्य केन्द्र में दो-दो स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को पदस्थ किया गया है। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में ग्रामीण स्वास्थ्य सहायक/आयुष चिकित्सक भी पदस्थ हैं। क्षेत्र में दो 108-एम्बुलेंस एवं तीन अन्य एम्बुलेंस उपलब्ध हैं जो निरंतर सेवा प्रदान कर रही है। सभी गांवों में स्वास्थ्य शिविर एवं जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि विशेष पिछड़ी जनजाति समुदाय के लिए विशेष कार्ड बनाने की पहल की गई है, जिसमें उनके स्वास्थ्य जांच संबंधी जानकारियां संधारित की जाएगी। कार्ड से उनके इलाज व दी गयी दवाईयों के बारे में पता चल सकेगा। इसके साथ ही जिले के सभी पण्डो और पहाड़ी कोरवा बहुल बसाहटों में विशेष स्वास्थ्य व जनजागरूकता शिविर का आयोजन भी किया जा रहा है। घर-घर जाकर लोगों की जांच कर उनकी शारीरिक समस्याओं के अनुसार निःशुल्क दवाईयां भी दे रहे हैं। प्रशासन व स्वास्थ्य अमले ने व्यवहार परिवर्तन व स्वच्छता को भी प्रमुखता के साथ अपने अभियान में शामिल किया है।

छत्तीसगढ़ में 20 सितम्बर को सर्वाधिक लोगों को कोरोना के विरूद्ध टीका लगाया गया

प्रदेश भर में 3260 साइट्स पर एक ही दिन में 4.29 लाख लोगों का टीकाकरण

रायपुर। छत्तीसगढ़ में 20 सितम्बर को रिकॉर्ड संख्या में कोरोना से बचाव का टीका लगाया गया है। इस दिन प्रदेश भर के 3260 टीकाकरण साइट्स पर चार लाख 29 हजार लोगों को टीका लगाया गया। स्वास्थ्य मंत्री टी.एस. सिंहदेव के निर्देश पर राज्य में जल्द से जल्द सौ फीसदी टीकाकरण का लक्ष्य हासिल करने तेजी से टीकाकरण किया जा रहा है। इसके लिए टीकाकरण साइट्स की संख्या भी लगातार बढ़ाई जा रही है ताकि एक ही जगह पर ज्यादा भीड़ न हो। स्वास्थ्य विभाग का अमला युद्ध स्तर पर कोविड टीकाकरण में लगा हुआ है। स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला ने इस उपलब्धि पर पूरे स्वास्थ्य अमले को बधाई दी है और टीकाकरण में तेजी बनाए रखने कहा है ताकि सभी पात्र लोगों का टीकाकरण जल्दी से जल्दी किया जा सके। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की संचालक एवं कोरोना टीकाकरण की राज्य नोडल

अधिकारी डॉ. प्रियंका शुक्ला ने बताया कि 20 सितंबर को प्रदेश में 3260 सेशन साइट्स पर चार लाख 29 हजार लोगों को टीका लगाया गया। इससे पहले इस साल 26 जून को सर्वाधिक संख्या में टीके लगाए गए थे। उस दिन कुल तीन लाख 50 हजार 492 व्यक्तियों का टीकाकरण किया गया था। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने बताया कि 20 सितम्बर को लक्ष्य के विरूद्ध सूरजपुर जिले में सर्वाधिक 194 प्रतिशत टीकाकरण किया गया। वहीं दन्तेवाड़ा में 156:, बलौदाबाजार-भाटापारा में 154::, जशपुर में 129:, बालोद में 126:, बेमेतरा में 121:, कोरबा में 113:, कांकेर में 96:, सरगुजा में 82:, गरियाबंद में 80:, बलरामपुर में 75:, कोरिया व रायगढ़ में 69-69:, सुकमा में 68:, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही में 67:, मुंगेली में 64:, जांजगीर-चांपा में 62:, कबीरधाम में 60:, धमतरी में 59:, दुर्ग में 55:, बिलासपुर में 54:, रायपुर में 46:, कोण्डागांव में 45:, महासमुंद में 43:, राजनांदगांव में 40:, नारायणपुर में 32:, बीजापुर में 26: तथा बस्तर जिले में 24: लोगों का निर्धारित लक्ष्य के विरूद्ध कोविड टीकाकरण किया गया। 20 सितम्बर को राज्य के लिए निर्धारित कुल लक्ष्य के विरूद्ध 78 प्रतिशत लोगों का टीकाकरण किया गया। टीका लगाने के बाद भी कोरोना के खतरे को कम करने के लिए कोविड अनुरूप व्यवहार करना, मास्क लगाना, शारीरिक दूरी रखना एवं हाथों की समुचित साफ-सफाई आवश्यक है।

स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव की अध्यक्षता में चन्दूलाल चन्द्राकर अस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज संचालक मंडल की बैठक सम्पन्न

राज्य सरकार द्वारा अधिग्रहण के बाद हुई पहली बैठक, अस्पताल एवं कॉलेज संचालन की प्रकिया में तेजी लाने के निर्देशरू बजट व्यवस्था के संबंध में हुई विस्तार से चर्चा, राज्य शासन द्वारा अस्पताल और कॉलेज के लिए 1041 पद स्वीकृत, जल्द शुरू होगी भर्ती प्रक्रिया

रायपुर। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री टी.एस. सिंहदेव की अध्यक्षता में चन्दूलाल चन्द्राकर मेमोरियल अस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज संचालक मंडल की बैठक आयोजित की गई। गौरतलब है कि राज्य सरकार द्वारा चन्दूलाल चन्द्राकर अस्पताल एवं कॉलेज के अधिग्रहण के बाद यह पहली बैठक थी। बैठक में स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने अस्पताल एवं कॉलेज की वर्तमान व्यवस्था के संबंध में जानकारी ली और संचालन की प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए। बैठक में मेडिकल कॉलेज में अध्ययनरत 150 छात्र-छात्राओं की निरंतरता एवं सभी संचालित विषयों में पीजी कोर्स शुरू करने के लिए अनुमति लेने की प्रकिया शुरू करने पर सहमति प्रदान की गई। बैठक में मेडिकल कॉलेज के लिए सभी आवश्यक प्रक्रियाएं शासन की अन्य मेडिकल कॉलेजों के अनुरूप संचालित करने के निर्देश दिए गए। स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने अस्पताल और कॉलेज के अधोसंरचना विकास एवं निर्माण के संबंध में भी जानकारी ली। उन्होंने प्रारंभिक तौर से आवश्यकता के अनुरूप साफ-सफाई एवं मरम्मत कार्य, चिकित्सा उपकरणों को दूरस्त करने सहित अस्पताल में चाक-चौबंद व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

बैठक में अस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज में चिकित्सों, शिक्षकों सहित अन्य स्टॉफ की भर्ती के संबंध मे चर्चा की गई। अधिकारियों ने बताया कि राज्य शासन द्वारा अस्पताल एवं कॉलेज के लिए क्रमशः 616 और 425 पदों इस तरह कुल 1041 पदों में भर्ती के लिए मंजूरी प्रदान कर दी गई है। स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने कहा कि बजट व्यवस्था के हिसाब से नियमित नियुक्ति होने तक अति आवश्यक सेवाओं के लिए अस्थाई व्यवस्था कर ली जाए, ताकि अस्पताल और कॉलेज संचालन में व्यवधान न हो। अस्पताल में ओपीडी सेवा प्रारंभ करने के संबंध में भी चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि सरकार का काम लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करना है। ओपीडी सेवा शुरू होने के बाद अन्य शासकीय अस्पतालों के प्रावधानों के अनुरूप निःशुल्क सेवाएं प्रदान की जाएं। बैठक में दुर्ग के कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेन्द्र भूरे, संचालक चिकित्सा शिक्षा डॉ. विष्णु दत्त, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. गंभीर सिंह ठाकुर, ओएसडी मेडिकल कॉलेज नूपुर राशि पन्ना, अधिष्ठाता डॉ. पी.के. पात्रा और अधीक्षक डॉ. निर्मल वर्मा उपस्थित थे।

सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह रथ यात्रा को स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने दिखाई हरी झंडी

रायपुर। स्वास्थ्य मंत्री टी एस सिंहदेव ने स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह रथ यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रथ यात्रा 15 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2021 तक संचालित की जायेगी। स्वच्छता के प्रति जन-जागरूकता के उद्देश्य से सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह रथ यात्रा का शुभारंभ आज माननीय स्वास्थ्य मंत्री टी. एस सिंहदेव के करकमलों से हुआ, इस रथ को पूरे प्रदेश के सभी 28 जिलों के सभी विकासखण्डों में जाएंगे। रथ यात्रा का उद्देश्य स्वच्छता के संदेश को प्रसारित कर ग्रामीणों को जागरूक करना है। सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह रथ यात्रा ओ.डी.एफ प्लस की अवधारणा पर आधारित है। इसी अवधारणा पर सभी जिले से एक-एक स्वच्छता रथ भी निकाले जा रहे हैं, जो कि गांव-गांव में स्वच्छता के

प्रति जन-जागरूकता फैलाऐंगें। स्वच्छता ही सेवा अभियान का आरंभ भी 15 सितम्बर 2021 से हो रहा है। इसके अंतर्गत सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई, सोकपिट का निर्माण कम्पोस्ट पिट का निर्माण, प्लास्टिक अपशिष्ट एकत्रिकरण, घर-घर कचरा एकत्रिकरण आदि हेतु श्रमदान राज्य के 20000 गांव में आयोजित होगा। इसमें जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं ग्रामीणों द्वारा श्रमदान किया जायेगा।

डॉ भीमराव अंबेडकर स्मृति चिकित्सालय (मेकाहारा) में नव निर्माण कार्यों का निरीक्षण करने पहुँचे स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव

निजी अस्पतालों की तर्ज पर किये जा रहे विकास कार्यों और स्वास्थ्य व्यवस्थाओं का किया अवलोकन

रायपुर। स्वास्थ्य मंत्री टी एस सिंहदेव 9 सितम्बर को राजधानी स्थित डॉ भीमराव अंबेडकर स्मृति चिकित्सालय पहुँचे, यहाँ उन्होंने नवनिर्मित विकास कार्यों का गहन अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने नए निर्मित हुए सोनोग्राफी कक्ष, कॉन्सल्टेंशन कक्ष, गायनॉलॉजिस्ट कक्ष, डॉक्टर्स चेंजिंग रूम, आपरेशन कक्ष, डेमोंस्ट्रेशन कक्ष, रिकवरी/ऑब्जरवेशन रूम और भंडारण कक्ष समेत ऑक्सीजन व्यवस्था का गहन अवलोकन किया। इस दौरान स्वास्थ्य मंत्री सिंहदेव ने मरीजों के लिए उपलब्ध सुविधाओं की समीक्षा करते हुए चिकित्सालय प्रबंधन से जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि चिकित्सालय में अलग-अलग विंग है तो हर विंग में अलग-अलग प्रकार की व्यवस्था रहेगी, मेटरनिटी विंग महिलाओं के उपचार के लिए, प्रसव के पहले और बाद में उसकी जांच के लिए वार्ड की व्यवस्था, इसके साथ तीन ऑपरेशन थिएटर भी निर्मित किये गए हैं, ऑपरेशन थिएटर के करीब डॉक्टरों की बैठने की व्यवस्था, कंसल्टेशन चेंबर, स्टोर रूम, डॉक्टरों के लिए चेंजिंग रूम बनाए गए हैं। जहाँ डॉक्टर चेंज और सेनेटाइज़ करने के उपरांत फिर काम करने में जाएं प्रयास किया गया है कि बेहतर से बेहतर सुविधाएं दे पाए और उन्होंने जिम्मेदारी ली है कि एक छत के नीचे सभी सुविधाएं उपलब्ध हो पायें। उन्होंने

कहा कि संस्थागत डिलीवरी के लिए वर्तमान समय मे उपलब्ध सुविधाओं की तुलना में और भी सुविधा बढ़ाने की आवश्यकता है।

30 बिस्तर प्रति वार्ड के चिकित्सालय में सभी बिस्तर पाइप लाइन ऑक्सिजन से सुविधायुक्त

ऑक्सीजन प्लांट के निरीक्षण के दौरान स्वास्थ्य मंत्री टी एस सिंहदेव ने कहा कि चिकित्सालय में 30 बिस्तर प्रति वार्ड की सुविधा उपलब्ध है, जिसमें हर वार्ड-बिस्तर पाइप लाइन ऑक्सिजन की सुविधा से युक्त है। स्वास्थ्य विभाग

सुविधाओं के विस्तार के साथ ही गुणवत्ता पर भी खास ध्यान दे रहा है, जब अस्पताल बना था तो परिकल्पना यह नहीं थी कि इतने ज्यादा लोग आएंगे हालांकि कालीबाड़ी में अलग विंग चलेगा यहां पर अलग चलेगा तो व्यवस्था और बढ़ानी पड़ेगी। इसके साथ ही कंसल्टेशन से लेकर और भी व्यवस्था बढ़ानी पड़ेगी, ऊपर के मंजिल में भी प्ब्न् के बिस्तरों की संख्या बढ़ाने एवं नई बिल्डिंग भी बढ़ाने का प्लान है। जिसपर आगे विभाग के द्वारा और भी कार्य किये जायेंगे एवं जन-जन को शासन के द्वारा आसानी से गुणवत्तापूर्ण सुविधा उपलब्ध करवाई जायेगी।

गुजरात के नए मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल को लीडरशिप ने दिया है यह टारगेट, चुनाव में मिलेगी मदद

गुजरात की राजधानी गांधीनगर में 3 अक्टूबर को स्थानीय चुनाव होने हैं। इसके साथ ही अगले हफ्ते विधानसभा का दो दिवसीय मानसून सत्र भी बुलाया गया है। ऐसे में पार्टी का भी प्राइमरी फोकस इन्हीं दोनों पर रहने वाला है। जिन परियोजनाओं को पूरा करना सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकता है, उनमें सीमा दर्शन के लिए शुरू होने वाली नडाबेट परियोजना और कच्छ में भव्य रिन्यूएबल एनर्जी पार्क बनाना शामिल है। इस प्रोजेक्ट को वाघा अटारी सीमा के पर्यटन पर विकसित किया जा रहा है। वहीं, आने वाले दिनों में गुजरात सरकार एक्शन मोड में दिखेगी। नई दिल्ली से मिले निर्देशों के बाद राज्य में जल्द से जल्द कई परियोजनाओं का उद्घाटन किया जाएगा।

पहली बार विधायक बने और अब सीधे सीएम का पथ

भूपेंद्र पटेल गुजरात के 70वें मुख्यमंत्री बने है, वह गुजरात की घटलोदिया विधानसभा सीट से विधायक है। 59 साल के भूपेंद्र पटेल पहली बार ही विधायक बने थे और अब सीधे मुख्यमंत्री पद पर ही सवार हो गए हैं। आनंदी बेन पटेल के राज्यपाल बनने के बाद जो सीट खाली हुई थी, उसी सीट से भूपेंद्र पटेल भी विधायक है। यह सीट गांधीनगर लोकसभा सीट के अंतर्गत आती है, जहाँ से अमित शाह सांसद है।

खाली पड़ी खदानों पर मानव निर्मित जंगल बनाने का कार्य प्रशंसनीयः मुख्यमंत्री बघेल

मुख्यमंत्री ने नंदिनी की खाली पड़ी माइंस में बने विशाल मानव निर्मित जंगल का किया अवलोकन, मुख्यमंत्री ने जन वन कार्यक्रम अंतर्गत लगाया बरगद का पौधा, यहाँ लगाए गये 83 हजार से अधिक पौधे

दुर्ग/ देश में पर्यावरण की मानव निर्मित विशाल धरोहर दुर्ग जिले के नंदिनी की खाली पड़ी माइंस में बनी है। यहां विशाल मानव निर्मित जंगल विकसित किया गया है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने नंदिनी में इस प्रोजेक्ट का अवलोकन किया। नंदिनी की खाली पड़ी खदानों की जमीन में यह प्रोजेक्ट विकसित किया गया है। लगभग 3.30 करोड़ रुपए की लागत से यह प्रोजेक्ट तैयार किया गया है। जन वन कार्यकम में मुख्यमंत्री बघेल ने यहाँ बरगद का पौधा लगाया और जंगल का अवलोकन किया। उल्लेखनीय है कि इसके लिए डीएमएफतथा अन्य मदों से राशि ली गई है।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के निर्देश पर पर्यावरण संरक्षण के लिए यह प्रोजेक्ट तैयार किया गया। यह प्रोजेक्ट देश दुनिया के सामने उदाहरण है कि किस तरह से निष्प्रयोज्य माइंस एरिया को नेचुरल हैबिटैट के बड़े उदाहरण के रूप में बदला जा सकता है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि पर्यावरण को संरक्षित करने यह प्रशंसनीय कदम है। यहां 100 एकड़ में औषधीय पौधे तथा फ्लोद्यान भी विकसित करें। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिये ये बड़ी पहल है। इससे प्रदूषण को नियंत्रित करने में भी मदद मिलेगी।

वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री तथा दुर्ग जिले के प्रभारी मंत्री मोहम्मद अकबर ने कहा कि हमने प्रकृति को सहेजने बड़े निर्णय लिए। चाहे लेमरू प्रोजेक्ट हो या नदियों के किनारे प्लांटेशन, प्रकृति को हमने हमेशा तवज्जो दी। यहां मानव निर्मित जंगल का बड़ा काम हुआ है। मैं इसके लिए क्षेत्र की जनता को बधाई देता हूँ। इस अवसर पर पीएचई मंत्री गुरु रुद्र कुमार, उच्च शिक्षा मंत्री उमेश पटेल ने भी पौधरोपण किया। उल्लेखनीय है कि 17 किलोमीटर क्षेत्र में फैले नंदिनी के जंगल में पहले ही सागौन और आंवले के बहुत सारे वृक्ष मौजूद हैं। अब खाली पड़ी जगह में 83,000 पौधे

लगाये गये हैं। इसके लिए डीएमएफ-एडीबी से राशि स्वीकृत की गई। इस अवसर पर पीसीसीएफ राकेश चतुर्वेदी ने विस्तार से प्रोजेक्ट की जानकारी दी और इस कार्य मे लगे अधिकारियों को बधाई दी। सीएफ श्रीमती शालिनी रैना ने भी प्रोजेक्ट की टीम को बधाई दी। कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेंद्र भुरे तथा डीएफओ धम्मशील गणवीर ने विस्तार से प्रोजेक्ट की जानकारी मुख्यमंत्री को दी। उन्होंने बताया कि 83,000 पौधे लगाये जा चुके हैं। 3 साल में यह क्षेत्र पूरी तरह जंगल के रूप में विकसित हो जाएगा।

यहां पर विविध प्रजाति के पौधे लगने की वजह से यहां का प्राकृतिक परिवेश बेहद समृद्ध होगा। गणवीर ने बताया कि यहां पर पीपल, बरगद जैसे पेड़ लगाए गये हैं जिनकी उम्र काफी अधिक होती है साथ ही हर्रा, बेहड़ा, महुवा जैसे औषधि पेड़ भी लगाए गये हैं। इस मौके पर पीसीसीएफ वन्य संरक्षण नरसिंह राव, लघु वनोपज के एमडी संजय शुक्ला, आईजी विवेकानंद सिन्हा, एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे। साथ ही बीएसपी सीईओ अनिर्बान दासगुप्ता भी उपस्थित रहे।

पक्षियों के लिए आदर्श रहवास- पूरे प्रोजेक्ट को इस तरह से विकसित किया गया है कि यह पक्षियों के लिए भी आदर्श रहवास बनेगा तथा पक्षियों के पार्क के रूप में विकसित होगा। यहां पर एक बहुत बड़ा वेटलैंड है जहां पर पहले ही विसलिंग डक्स, ओपन बिल स्टार्क आदि लक्षित किए गए हैं यहां झील तथा नजदीकी परिवेश को पक्षियों के ब्रीडिंग ग्राउंड के रूप में विकसित होगा। इको टूरिज्म का होगा विकास- इसके साथ ही इस मानव निर्मित जंगल में घूमने के लिए भी विशेष व्यवस्था होगी। इसके लिए भी आवश्यक कार्य योजना बनाई गई है ताकि यह छत्तीसगढ़ ही नहीं अपितु देश के सबसे बेहतरीन पर्यटन स्थलों में शामिल हो सके।गुजरात के मुख्यमंत्री बने भूपेंद्र पटेल ने पदभार संभालने के बाद सोमवार को पहली बार प्रधानमंत्री और गृहमंत्री से मुलाकात की और इसके साथ ही गुजरात में अगले विधानसभा चुनावों से पहले ही अपनी पार्टी को मजबूत बनाने के लिए उन्हें कुछ टारगेट भी दे दिए गए। माना जा रहा है कि शीर्ष नेतृत्व की तरफ से पटेल को बता दिया गया है कि वे अपने राज्य में लंबित प्रोजेक्ट्स को जल्द से जल्द पूरा करने के साथ ही नौकरशाही में भी सुधार करें ताकि जनता के बीच सरकार की छवि में सुधार हो।

माहवारी स्वच्छता प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

अम्बिकापुर। लुंड्रा, बतौली एवं सीतापुर ब्लॉक के स्व सहायता समूह की महिलाओं का माहवारी स्वच्छता प्रबंधन पर आज एक दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण का आयोजन सरगुजा साइंस ग्रुप एवं जन शिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुआ, जिसमें 15 समूहों की महिलाओं को रोजगार शुरू करने के लिए मासिक स्वच्छता प्रबन्धन के कार्य से जोड़ते हुए उन्हें बिना पूंजी लगाये 3000-3000 रुपये का सैनेटरी पैड एवं जागरूकता कार्यक्रम हेतु पैड का वितरण किया गया, एक गांवों में कैसे माहवारी स्वच्छता पर कार्य करना है, इस पर दो सत्रों में विभिन्न विषयों पर सार्थक चर्चा हुई।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में जन शिक्षण संस्थान के निदेशक एम.सिद्दीकी ने स्व सहायता समूह की जरूरत, निर्माण की प्रक्रिया एवं कार्य करने के तरीके सहित विभिन्न विषयों पर जानकारी दी एवं समूह की महिलाओं के विभिन्न प्रश्नों का जवाब दिया। उन्होंने भारत सरकार के स्किल मंत्रालय द्वारा महिलाओं के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी एवं महिलाएं कैसे ट्रेनिंग ले सकती हैं, इस पर चर्चा की। सीए निष्ठा पांडेय ने माहवारी पर परम्परागत चलने वाले रूढ़िगत विषयों को सामने रखा तथा बताया कि आज हम सब 21वीं सदी में जी रहे हैं और हमें इन रूढ़ियों को बदलना है, मुझे खुशी हो रही है कि ग्रामीण महिलाएं ऐसे विषयों पर आगे आकर कार्य कर रहीं हैं। घरों से निकल कर आपका कार्य करना यह बताता है कि आपने इस विषय को समझा है और माहवारी स्वच्छता क्यों जरूरी है, इस पर अब दूसरों को समझाने का बीड़ा उठाया है। हम सब के आपसी सहयोग से हम इस पर बेहतर कार्य करेंगे और रूढ़िगत विचारों को माहवारी को लेकर समाज में फैले किवंदितियों को धीरे-धीरे निकाल फेकेंगे। सुखद मातृत्व के लिए माहवारी जरूरी है और यह घबराने, छुपाने या दूर भागने की चीज नहीं, बल्कि नवसृजन हेतु आवश्यक प्रकृति प्रदत्त एक सिस्टम है।

सीए तृषा समादर ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि एक ऐसा विषय जो हम से जुड़ा है और हम ही इस पर बात करने से कतराते हैं, कैसे हम इन सब चीजों से बाहर आयेंगे, अपने आपको उस दौरान सवच्छ रखेंगे यह बेहद जरूरी और हमारे स्वास्थ्य से

जुड़ा विषय है, इस पर तो हमें तमाम बंदिशों से बाहर निकल कर बात करना होगा, अन्यथा यह हमारे मातृत्व एवं स्वास्थ्य दोनों के लिए घातक होगा। आज जब हम यहां से जायें तो कम से कम यह प्रेरणा लेकर जायें की ज्यादा नहीं 10 बहनों को जागरूक करेंगे। सुखद स्वास्थ्य का मंत्र देंगे, माहवारी स्वच्छता प्रबंधन की जानकारी देंगे।

माहवारी स्वच्छता प्रबन्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वितीय सत्र को संबोधित करते हुए वैज्ञानिक डॉ प्रशांत शर्मा, प्रभारी बायोटेक सरगुजा ने कहा कि यह हर बेटी का सौभाग्य है कि वह किसी की पुत्री होगी, लेकिन यह हर पिता के भाग्य में नहीं है कि वह पुत्री का पिता बनेगा। उन्होंने कहा कि मैं आध्यात्मिक बात कर रहा हूँ लेकिन यह माहवारी की जब बात की जा रही है तो जरूरी है, क्यों कि हम एक बेटी की प्राकृतिक देन पर बात कर रहे हैं, यह कोई समस्या नहीं है, बल्कि प्रकृति की देन है और हमें प्रकृति की इस देन पर खुल कर चर्चा करनी है, स्वच्छता पर बात करनी है, घर, परिवार, गांव, ब्लॉक, जिला से पहले स्व स्वच्छता बेहद जरूरी है और माहवारी के दौरान आप जितना स्वच्छ एवं पोषण युक्त भोजन करेंगे, भविष्य के सुखद मातृत्व के लिए आप उतना ज्यादा तैयार हो रहे हैं। माहवारी में स्वच्छता पर ध्यान नहीं देने से कई तरह की बीमारी शुरू हो जाती है जो आगे मातृत्व को भी प्रभावित करती है। इसलिए माहवारी जैसे विषय पर बात करने से झिझकना नहीं है, डरना नहीं है, भागना नहीं है, बल्कि खुल कर अपनी बात रखें, कोई समस्या है तो नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में परामर्श लें, स्वयं हर परेशानी का ईलाज न करें यह गंभीर हो सकता है।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के परियोजना अधिकारी रौशन गुप्ता ने महिला समूहों के आपसी समन्वय से कार्य करने के तरीके पर चर्चा करते हुए कहा कि एक ही समूह सम्पूर्ण जिले या ब्लॉक में कार्य नहीं कर सकती, इसलिए चौन सिस्टम बनाइये ताकि सबको सहूलियत हो और कारगर तरीके से कार्य हो सके, जिसका परिणाम सुखद हो। उन्होंने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि हमारे जिले में 2014 से ही माहवारी स्वच्छता प्रबन्धन पर कार्य हो रहा है और लगभग 100: गांवों में इस पर चर्चा के साथ-साथ कुछ न कुछ काम एक सामाजिक संस्था के द्वारा किया जा रहा है। आगामी समय में स्वच्छता सर्वे में भारत सरकार ने अपने नई गाईड लाईन में दूसरे नम्बर पर एमएचएम को रखा है, जिसके पॉइंट स्वच्छता सर्वे में जुड़ेंगे, और आप सब पहले से कार्य कर रहे है कई ब्लॉकों में आप लोग 100: गांवों में कार्य कर रहे हैं, कुछ 100:, 80:, 70:, 50: एमएचएम ग्राम पंचायत हैं वहां पर तो हमें ध्यान देना ही है, जिन गांवों में 10 से 30-40: रिस्पांस है, वहां और ऊर्जा के साथ जिला, ब्लॉक, ग्राम स्तर पर सामन्जस्य स्थापित कर कार्य करना है ताकि आगामी स्वछता सर्वे में हम सब के भागीरथ प्रयास से बेहतर परिणाम आये। पॉलीथिन मुक्त ग्राम, ईको-फ्रैंडली के साथ-साथ गुणवत्ता एवं उचित दर का सैनेटरी पैड महिलाओं तक पहुंचे यह बेहद जरूरी है। सरगुजा साइंस ग्रुप के संस्थापक अंचल ओझा ने 2014 से लेकर अब तक किये जा रहे कार्यक्रमों की विस्तार से आंकड़ेबद्ध जानकारी प्रजेंटेशन एवं वीडियो के माध्यम से दी तथा ऐसे सक्रिय ग्राम पंचायत और समूह जहां माहवारी स्वच्छता पर बेहतर कार्य हो रहे हैं उसकी जानकारी दी। महिला समूहों ने अपने अनुभव सांझा किये, कैसे इस कार्य को करने में समस्या होती है, कैसे महिलाओं और लड़कियों को जोड़ कर कार्य कर रही हैं, इस विषय पर लुंड्रा के दोरना, बरगीडीह, बतौली के मंगारी , अम्बिकापुर के गंगापुर, केशपुर के समूहों ने जानकारी दी।

इस दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर कार्य करने के लिए, समूहों को एकजुट करने के लिए जन शिक्षण संस्थान के निदेशक एम.सिद्दीकी, पवित्रा प्रधान, अमित दुबे, दीपा यादव, प्रिया यादव, प्रियंका सिंह, कमला प्रधान, सुशीला प्रधान, सदीकुन निशा, राशि सिंह, चंपा, दीपांजलि, सावंत, मुनिता, श्रीमती, सरिता, शकुंतला, मोहरमनी, भुनेश्वरी, गुलाबी, दीप्ति, गुलाब केशरी, अणिमा, अंजली का प्रशस्ती पत्र द्वारा सम्मान किया गया एवं अम्बिकापुर, लुंड्रा, बतौली, सीतापुर के 15 समूहों को मासिक स्वच्छता प्रबन्धन किट प्रोजेक्ट ईज्जत के माध्यम से वितरित किया गया, जिसके माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की राह आसान होगी। कार्यक्रम का संचालन सुनीता दास ने किया, इस अवसर पर रमेश कुमार, विवेक सिंह, आकाश, स्नेहलता, वंदना, अंजुलता सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

राहगीरों की सुविधा के लिए हाईवे किनारे सामुदायिक शौचालय बनकर तैयार

अम्बिकापुर। स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत जिले के 3 विकासखण्डों में हाईवे किनारे सर्व सुविधायुक्त सामुदायिक शौचालय बनकर तैयार हो गए है। इस सामुदायिक शौचालय के बनने से अब हाईवे में आने-जाने वाले राहगीरों को सुविधा होगी। सामुदायिक शौचालय के साथ ही दुकान के लिये भवन भी निर्मित किया गया है। इन सामुदायिक शौचालय सह दुकान का संचालन ग्राम पंचायतों के समूह की स्वच्छाग्राही महिलाओं के द्वारा किया जाएगा।

कलेक्टर संजीव कुमार झा के मार्गदर्शन तथा जिला पंचायत के सी.ई.ओ. विनय कुमार लंगेह के नेतृत्व में स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत जिले के सभी विकासखण्डों में हाईवे किनारे एक एक सामुदायिक शौचालय सह दुकान भवन का निर्माण किया जा रहा है। स्वच्छ भारत मिशन के जिला परियोजना अधिकारी रोशन गुप्ता ने बताया कि अब तक बतौली, मैनपाट एवं सीतापुर विकासखण्डों में सामुदायिक शौचालय सह दुकान का निर्माण पूर्ण हो गया है तथा शेष चार विकासखण्डों में

निर्माणाधीन भवन इस माह के अंत तक पूरे हो जाएंगे। उन्होंने बताया कि प्रत्येक सामुदायिक शौचालय सह दुकान का निर्माण 5.50 लाख रुपये की लागत से किया जा रहा है। कलेक्टर संजीव झा ने सामुदायिक शौचालयों में पानी की पर्याप्त व्यवस्था के लिए प्रत्येक यूनिट में पृथक बोर करने के निर्देश लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारियां को दिए हैं। उल्लेखनीय है कि एन.एच. किनारे सामुदायिक शौचालय सह दुकान निर्माण से राहगीरों को सुविधा मिलने के साथ ही गांव के लोगों को रोजगार भी मिलेगा। ग्राम पंचायत के द्वारा दुकान संचालन के लिए गांव के ही किसी जरूरतमंद व्यक्ति को जिम्मेदारी दी जाएगी।

उत्तर कोरिया ने किया लंबी दूरी की क्रुज मिसाइल का परीक्षण

अमेरिका के साथ 2019 से जारी गतिरोध के बीच उत्तर कोरिया ने एक बार फिर लंबी दूरी तक मार करने वाली क्रुज मिसाइल का परीक्षण किया है। उत्तर कोरियाई सरकारी मीडिया ने बताया कि इस क्रुज मिसाइल ने करीब 1,500 किलोमीटर दूर लक्ष्य पर सटीक वार किया। इसे उत्तर कोरिया ने रणनीतिक हथियार बताते हुए बेहद अहम करार दिया है। बीते कुछ वर्षों में उत्तर कोरिया द्वारा परीक्षण की यह पहली ज्ञात गतिविधि है जो बताती है कि उत्तर कोरिया किस तरह अमेरिका के साथ एटमी वार्ता में गतिरोध के बीच अपनी सैन्य क्षमताओं को बढ़ा रहा है। कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी ने सोमवार को बताया कि किम जोंग ट्र उन के निर्देश पर क्रुज मिसाइल विकसित करने का काम पिछले दो वर्षो से चल रहा था।

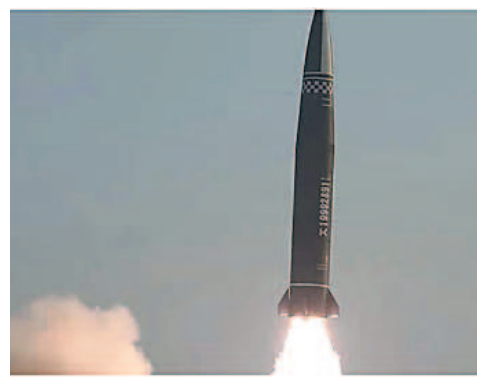

अमेरिका से गतिरोध खत्म होने की आसार नहीं

अमेरिका और उत्तर कोरिया के बीच परमाणु वार्ता में ढाई साल से गतिरोध जारी है। वर्ष 2019 में अमेरिका ने पाबंदियों में बड़ी राहत देने का उत्तर कोरिया का अनुरोध ठुकरा दिया था। अब किम की सरकार बाइडन प्रशासन के वार्ता के अनुरोध को ठुकरा रही है, उसका कहना है कि पहले वाशिंगटन अपनी ' शत्रुतापूर्ण ' नीतियों को छोड़े। फिलहाल इस गतिरोध के खत्म होने के आसार दिखाई नहीं दे रहे हैं।

देश अमेरिका पर वार्ता का दवा बनाने की कोशिश

जानकार बताते हैं कि मिसाइलों का परीक्षण करना उत्तर कोरिया की सोची समझी रणनीति का हिस्सा है। वह खुद पर लगे अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों को खत्म करने के लिहाज से अमेरिका पर वार्ता का दबाव बनाने को लेकर भी ऐसे परीक्षण करता रहा है।

चीन ने कहा, सभी पक्ष संयम बरतें

उत्तर कोरिया के मित्र चीन ने मिसाइल परीक्षण पर फिलहाल कोई टिप्पणी नहीं की है। हालांकि चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियन ने केवल सभी संबंधित पक्षों से संयम बरतने, उसी दिशा में आगे बढ़ने, सक्रिय रूप से बातचीत में शामिल होने और राजनीतिक समाधान तक पहुंचने के लिए संपर्क करने का आग्रह किया है। जबकि उत्तर कोरिया का कहना है कि मिसाइलों का विकास देश की रक्षा को अधिक भरोसेमंद बनाने की गारंटी देता है।

पड़ोसी देशों के खिलाफ प्रदर्शन पर नेपाल सरकार सख्त, दी चेतावनी

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला जलाने और नारेबाजी के खिलाफनेपाल सरकार ने सख्त रुख अपनाया है। नेपाल ने अपने नागरिकों को मित्र देशों की गरिमा व सम्मान को नुकसान पहुंचाने वाली किसी भी 'शर्मनाक और निंदनीय' हरकत करने के खिलाफकार्यवाही की चेतावनी दी। गृह मंत्रालय ने यह आदेश एक नेपाली युवक के उत्तराखंड में मौत के बाद देश में हो रहे विरोध प्रदर्शनों के दौरान पीएम मोदी के पुतला जलाने के बाद जारी किया है।

मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि पिछले कुछ दिनों से हमारे मित्र देश के प्रधानमंत्री की छवि खराब करने के लिए उनके खिलाफनारेबाजी पुतला जलाने और प्रदर्शनों की घटनाएं सामने आई हैं। हालांकि मंत्रालय ने अपने बयान में किसी नेता की पहचान नहीं बताई लेकिन उसने इस तरह की निंदनीय और शर्मनाक हरकतों पर सख्त आपत्ति जताई।

पड़ोसी देशों से दोस्ताना संबंध चाहती है सरकार

गृह मंत्रालय ने बयान में कहा गया है कि नेपाल सरकार किसी भी स्थिति में ऐसी घटनाएं नहीं होने देगी जिससे राष्ट्रीय हित को नुकसान पहुंचे।

नागरिक एसएसबी को बता रहे मौत का जिम्मेदार

उत्तराखंड में सीमावर्ती जिले पिथौरागढ़ के धारचूला के गस्कू में अवैध तरीके से भारत में प्रवेश कर रहे नेपाली युवक जय सिंह धामी की 30 जुलाई को काली नदी में गिर कर डूबने से मौत हो गई थी। नेपाल में विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों का आरोप है कि उसकी मौत के लिए एसएसबी जिम्मेदार है उनका कहना है कि जब तार के सहारे युवक नदी पार कर रहा था तो एसएसबी ने तार काट दिया था। हालांकि एसएसबी ने इन आरोपों को सिरे से खारिज किया। नेपाल में सत्ता में शामिल कम्युनिस्ट पार्टी के यूथ विंग और स्टूडेंट विंग के लोग विरोध कर रहे हैं और पीएम नरेंद्र मोदी का पुतला जला रहे हैं।

कश्मीर में आतंकवाद जीवित रखने की कोशिश में पाकिस्तान

नरकोट में मारा गया आतंकी अफजल पाकिस्तानी नागरिक

नई दिल्ली। नियंत्रण रेखा पर संघर्ष विराम के जरिये अपनी छवि सुधारने में जुटा पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को हर कीमत पर जिंदा रखना चाहता है। नर कोर्ट में सोमवार को मारे गए दो आतंकियों में एक की शिनाख्त पाकिस्तानी नागरिक मोहम्मद अफजल के रूप में हुई है। अनुच्छेद 370 और 35ए हटाने के बाद बदली परिस्थितियों और सुरक्षाबलों की सख्त कार्यवाही के कारण स्थानीय युवाओं का आतंकवाद से मोह भंग हो रहा है। यही कारण है कि आतंकी गतिविधियों में स्थानीय युवाओं की भर्ती घटी है। पाकिस्तान अब अपने ही नागरिकों को आतंकी बना कर भेज रहा है।

नरकोट में मारे आतंकी अफजल के पास से 13,370 रूपये की पाकिस्तानी मुद्रा भी मिली है। सूत्र बताते हैं, पिछले कुछ समय से कश्मीर में सुरक्षाबलों से मुठभेड़ के दौरान कई आतंकियों ने जिस तरह आत्मसमर्पण किया है उससे पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई काफी चिंतित है और अब वह अपने नागरिकों को आतंकी बनाकर भेजने में जुटी है।

अफगानी किशोर लखनपुर में पकड़ा

पुलिस ने लखनपुर के रास्ते जम्मू-कश्मीर में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे अफगानिस्तान निवासी किशोर को पकड़ा है। पुलिस इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रही है कि वह यहां क्यों आया है।

बंदूक थामने वाले 80 युवकों के परिवार से मिले सैन्य कमांडर

चिनार कोर के जीओसी लेफ्टिनेंट जनरल डीपी पांडेय कश्मीर में आतंकवाद का दामन थामने वाले 80 युवकों के परिवार वालों से मिले। पांडेय ने कहा, मैं आपसे अपने बच्चों को आतंकवाद के जाल से बाहर निकालने का अनुरोध करता हूं।

अयोध्या अपराजेय, बापू ने भी भारत में रामराज की कल्पना की थी: राष्ट्रपति

अयोध्या। आजादी के बाद पहली बार किसी राष्ट्रपति ने अयोध्या आकर राम जन्मभूमि में शीश झुकाया। पीतांबरी और भगवा ध्वज से सजी-धजी राम नगरी में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का कई जगह स्वागत किया गया। राम कथा पार्क में रामायण कॉन्क्लेव के मंच से राष्ट्रपति ने अयोध्या की महिमा गिरते हुए कहा कि बापू ने भारत में इसी रामराज की कल्पना की थी। कहा, अयोध्या अपराजेय है। इसका अर्थ है कि जिसके साथ युद्ध करना असंभव हो। रघु, दिलीप, अज, दशरथ और राम जैसे रघुवंशी राजाओं ने पराक्रम व शक्ति के कारण उनकी इस राजधानी को अपराजेय माना जाता था।

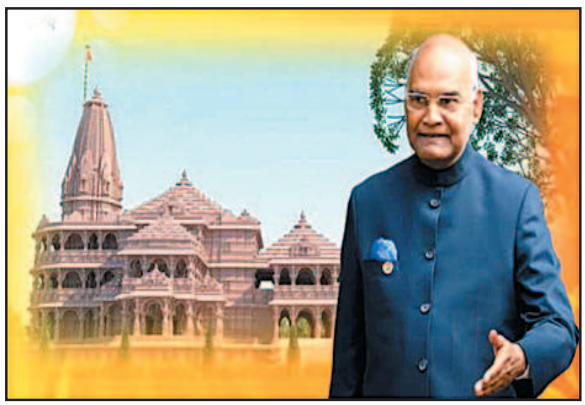

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और उनकी धर्मपत्नी सविता कोविंद रविवार दोपहर 11:35 बजे विशेष प्रेसिडेंसियल ट्रेन से उतरते ही राम-राम करते हुए आमजन से रूबरू हुए। वे रामायण कॉन्क्लेव का शुभारंभ करने के बाद अयोध्या में महाराज के रूप प्रतिष्ठित हनुमान जी का दर्शन पूजन करने हनुमानगढ़ी गए, फिर श्रीराम जन्मभूमि जाकर अस्थायी मंदिर में विराजमान रामलला का चारों भाइयों के साथ दर्शन दृ पूजन और आरती उतारी फिर राम मंदिर निर्माण देखने गर्भगृह भी गए।

मानवता के लिए हमेशा प्रासंगिक

राष्ट्रपति ने वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानवता के लिए राम का जीवन और रामराज की कल्पना को एक मात्र आधार बताया। रामायण कॉन्क्लेव के आयोजन और कला व संस्कृति के माध्यम से आम लोगों तक रामायण पहुंचाने के लिए सीएम योगी आदित्यनाथ और उनकी टीम की सराहना भी की। उन्होंने कहा रामायण का प्रचार महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें जीवन के नैतिक मूल्य मानवता के लिए हमेशा प्रासंगिक हैं।

महात्मा गांधी ने भी प्रभु राम के जीवन को आत्मसात किया

राष्ट्रपति ने कहा, महात्मा गांधी ने भी प्रभु राम के जीवन को आत्मसात किया था। बापू जी की दिनचर्या में राम नाम का बहुत ही महत्व था। गांधी जी द्वारा दिल्ली में मानस हरिजन कथा का आयोजन किया गया था मैं उसमें शामिल रहा। मैं आशा करता हूं कि अयोध्या भविष्य में मानव सेवा का एक उत्कृष्ट केंद्र बनेगी।

ओटीटी प्लेटफार्म के 66 फीसदी ग्राहक छोटे शहरों और कस्बों से

देश में ओटीटी कारोबार को लेकर आई नई रिपोर्ट ने सभी रणनीतिकारों के विश्लेषण बदल दिए। अभी तक मेट्रो शहरों के हिसाब से कंटेंट परोस जा रहे थे। नये रिपोर्ट के मुताबिक अब नए सिरे से इस पर सोचना पड़ेगा, क्योंकि इसके 66 : से ज्यादा दर्शक छोटे शहरों और कस्बों में आते हैं।

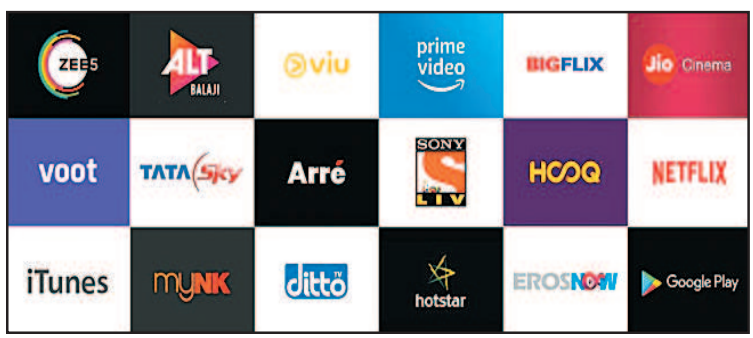

रिपोर्ट के मुताबिक, ओटीटी के अधिकतर नए ग्राहक अब उन शहरों व कस्बों से आ रहे हैं, जहां इंटरनेट की पहुंच हाल के दिनों में तेजी से बढ़ी है। करीब 12 हज़ार शहरी और ग्रामीण उपभोक्ताओं पर सर्वे में कहा गया है कि देश में करीब 35.32 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिन्होंने एक महीने में कम से कम एक बार ऑनलाइन वीडियो जरूर देखा। इसका मतलब है कि देश की 25.3 फ़ीसदी आबादी तक ओटीटी कारोबार पहुंच चुका है। इतना ही नहीं करीब चार करोड़ लोगों ने पैसे देकर ओटीटी पर मनोरंजन सामग्री देखी है। इनके पास अलग-अलग ओटीटी से करीब 9.60 करोड़ सदस्यताएं है। यानी पैसे देकर सामग्री देखने वाले हर ओटीटी दर्शक ने दो से अधिक ऐप की सदस्यता ले रखी है। इसमें 66 फ़ीसदी पुरुष है।

बड़े-बड़े शहरों की हिस्सेदारी महज 11:

सर्वे की सबसे चौंकाने वाली बात है कि इस कारोबार में देश के सबसे बड़े छह शहरों की भागीदारी महल 11: है। इनमें बेंगलुरु पहले नंबर पर है। उसके बाद दिल्ली और मुंबई आते हैं। रिपोर्ट जारी करने वाली कंपनी ऑरमेक्स मीडिया के सीईओ शैलेश कपूर के अनुसार, ओटीटी खास वर्ग तक सीमित नहीं रहा। इसकी वृद्धि की सबसे बड़ी संभावना बड़े शहरों के बाहर है।

फालतू याचिकाओं की बाढ़ से सर्वोच्च न्यायालय नाराज

हर मामले में फालतू याचिकाओं की बाढ़ पर सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी जताई है। तुच्छ व फालतू याचिकाओं से परेशान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सामूहिक रूप से हम सभी न्यायिक प्रणाली का मजाक बना रहे हैं। इस तरह की याचिका की वजह से हमें उन मामलों के निपटारे में दिक्कत हो रही है, जिनका निपटान ज़रूरी है और लोग लम्बे समय से न्याय का इंतजार कर रहे हैं। कोर्ट ने कहा हर मामले में अपील दायर करने के चलन को हतोत्साहित करना होगा।

जस्टिस संजय किशन कौल और जस्टिस हृषिकेश रॉय की पीठ ने कहा, एक आम इंसान की हमारी बारीकियों या कानूनी सिद्धांतों में कोई दिलचस्पी नहीं है। वादी यह जानने में उत्सुक रहता है कि उसके मुकदमे में दम है या नहीं और यह जानने के लिए वह अनिश्चित काल तक इंतजार नहीं करना चाहता। अगर फैसला आने में 10 या 20 साल लग जाए, तो वह उस फैसले का क्या करेगा। जस्टिस कौल ने कहा, सुप्रीम कोर्ट में हमने पाया है कि दीवानी मुकदमा 45 वर्षों से लंबित थे। हमें इस तरह के पुराने मामलों का भी निपटारा कर रहे हैं। पीठ ने यह भी कहा कि हमें हर मामले में अपील दायर करने की प्रथा को भी हतोत्साहित करना होगा। हम तथ्यो को लेकर तीसरे या चौथे स्तर की जांच नहीं कर सकते।

अग्रिम जमानत अर्जियों की बमबारी, कैसे निपटाएं पुराने मामले

जस्टिस कौल ने कहा, हम पर अग्रिम जमानत, जमानत, अंतरिम राहत जैसी याचिकाओं की 'बमबारी' होती रहती है। यही वजह है कि हमें पुराने मामलों के लिए वक्त ही नहीं मिलता है। पीठ ने यह कहा कि सुप्रीम कोर्ट में एक दशक से अधिक पुरानी दीवानी और फौजदारी अपीलें लंबित है।

आंनद की ब्लैकमेलिंग से आहत थे महंत लिखा- कहां तक सफाई दूंगा, मौत बेहतर

प्रयाग । अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरी ने शिष्य आंनद गिरी के ब्लैकमेल किए जाने से आहत होकर आत्महत्या की। मौत के बाद सार्वजनिक हुए सुसाइड नोट में यह दावा है। आंनद को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। यह नोट महंत के कमरे से मिला था। इसमें लिखा है, आंनद गिरी के कारण मेरा मन विचलित है। हरिद्वार से सूचना मिली है कि आंनद गिरी कंप्यूटर के जरिये लड़की के साथ मेरा फोटो जोड़कर बदनाम करेगा। आंनद का कहना है, महाराज कहां तक सफाई देते रहेंगे। मैं जिस सम्मान और इज्जत से जी रहा हूं, अगर मेरी बदनामी हो गई, तो मैं समाज में कैसे रहूंगा? इससे अच्छा है मर जाना।

महंत ने सुसाइड नोट में अपनी मौत के लिए आंनद, बड़े हनुमान मंदिर के पुजारी आघा तिवारी व उसके बेटे संदीप तिवारी को जिम्मेदार ठहराया है। पुलिस का कहना है, सुसाइड नोट की प्रामणिकता का पता फॉरेंसिक जांच के बाद ही चलेगा। इस बीच, आनंद को मंगलवार दोपहर हरिद्वार से गिरफ्तार कर सीधे प्रयागराज पुलिस लाइन ले जाया गया, जहां आला अफसरों ने देर शाम तक पूछताछ की। मामले की जांच के लिए विशेष जांच टीम (एसआईटी) भी बना दी गई है।

अखिलेश ने कहा - हाई कोर्ट जज से कराएं जांच

सपा अध्यक्ष व पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने मामले की हाईकोर्ट के मौजूदा जज से जांच कराने की मांग की। उन्होंने कहा, संदिग्ध हालात में महंत का निधन बहुत ही स्तब्ध करने वाला है। इसमें कुछ प्रमुख लोगों के भी नाम आ रहे हैं। मामले की जांच सिटिंग जज से कराई जानी चाहिए।

सीएम योगी श्रद्धांजलि देने पहुंचे, कहा- दोषी कोई भी हो बख्शा नहीं जाएगा

महंत नरेंद्र गिरी के अंतिम दर्शन के लिए प्रयागराज पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसे दुखद घटना बताते हुए कहा, आला अधिकारी मामले की जांच में जुटे है। दोषी कोई भी हो बख्शा नहीं जाएगा। सख्त कार्यवाई होगी। घटना को लेकर साक्ष्य एकत्रित किए गए हैं। हर एक घटना का पर्दाफाश किया जाएगा।

ब्रिटेन की संसद में चुनकर पहुंचने वाले पहले भारतीय

दादा भाई नौरोजी
जन्म-4 सितंबर 1825
मृत्यु-30 जून 1917

कहा जाता है कि बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी ने प्रखर राष्ट्रवादी नौरोजी से ही राजनीति का पहला पाठ सीखा था। वह ना केवल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे, बल्कि ब्रिटिष हुकूमत को चुनौती देने और विदेषों में भारत के हितों की लगातार रक्षा करते रहने वाले एक प्रमुख व्यक्ति भी थे। उन्होंने भारत के लिए सबसे पहले स्वराज की मांग की थी 1906 में काग्रेंस के कलकश्रा अधिवेषन में दादाभाई नौरोजी स्वराज यानी इंडिया का राज को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित कर दिया था।यह उस समय अपनी तरह की पहली घोषणा थी। अंग्रेज भारत का षोषण कर रहे थे। अंग्रेजी शासन के खिलाफ भारतीय को जागरुक करने के लिए उन्होंने बहुत सारे आलेख लिखे , भाषण दिए और धीरे-धीरे राजनीति में बहुत ज्यादा सक्रिय हो गए। उनका राजनीति में शामिल होना भारत के लिए

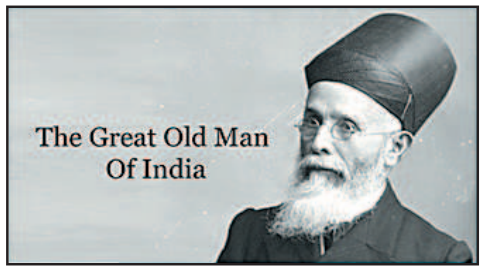

बहुत ही फायदेमंद साबित हुआ क्योंकि यहां से एक नए युग का सुत्रपात हुआ। इतना ही नहीं ,दादा भाई नौरोजी को दुनिया भर में जातिवाद और साम्राज्यवाद का के विरोधी की तरह भी जाना जाता हैं। 4 सितंबर 1825 को एक गरीब पारसी परीवार में जन्मे नौराजी के प्रगतिषील विचारो की तरह झुकाव कम उम्र में ही हो गया था। यही कारण है कि उन्होंने लड़कियो की पढ़ाई पर जोर दिया और 1840 के दषक में उन्होंने लड़कियों के लिए स्कूल खोला। इसके कारण उन्हें रुढ़िवादी पुरुषो का विरोध सामना करना पड़ा लेकिन वे तनिक भी डिगे नही। पांच साल के अंदर ही बॉम्बे में लड़कियों का स्कुल भरा पड़ा नजर आने लगा जिससे उनके इरादे और मजबूत हो गए। वह लैगिंक समानता की मांग करने लगे और उन्होंने महिलाओं और पुरुषो के लिए समान कानून का समर्थन किया। नौरोजी का कहना था कि भारतीय एक दिन ये समझेंगे कि महिलाओं को दुनिया में अपने अधिकारों का इस्तेमाल,सुविधाओं और कर्तव्यों का पालन करने का उतना ही अधिकार है जितना एक पुरूष को। आजदी के 6 दषक से ज्यादा समय बाद 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी पहल नौरोजी की तब की कही बात को ही सच साबित करती है। कार्यस्थल पर सुरक्षा-बराबरी का मामला हो या फिर उनके खिलाफ अपराध करने वालों के लिए सक्त कानुन बनाने का,बेटियों को पहली बार वो अधिकार मिले है,जिसकी बात नौरोजी उस समय करते थे। दादाभाई नौरोजी की स्वतंत्रता संग्राम में अहमियत का पता 1894 को महात्मा गांधी द्वारा लिखी गई उस चिट्ठी से चलता है जिसमें उन्होंने लिखा था-हिन्दुस्तानी आपकी तरफ ऐसे देखते हैं,जैसे बच्चे अपने पिता की ओर। यहां आपका लेकर कुछ इस तरह का अहसास है। यही कारण है कि कृतज्ञ शरतीय राष्ट्र आज भी उन्हें श्रद्धापूर्वक याद करता है।

आजादी के लिए निरंतर संघर्षरत रहे गोविन्द वल्लभ पंत

गोविन्द बल्लभ पंत
जन्म - 10 सितम्बर 1887
मृत्यु - 7 मार्च 1961

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे कई नायक भी थे जो ना केवल निरंतर देष की आजादी के लिए संघर्षरत रहे। बल्कि लोगों के दिलों में क्रांति के लिए अलख भी जगाते रहे। आजादी की लड़ाई में एक ऐसे ही सिपाही थे भारत रत्न गोविंद वल्लभ पंत, जिनकर जन्म 10 सितम्बर 1887 को आज के उत्तराखंड के अलमोड़ा में हुआ था उन्होने मुरी कॉलेज, इलाहाबाद विष्वविद्यालय से बी.ए.(एल.एल.बी.) के रूप में स्नातक की डिग्री प्राप्त की थी, जहाँ उन्हे शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए लम्सडेन पदक से सम्मानित किया गया था। बाद में काकोरी मुकद्में में एक वकील के तौर पर उन्हें पहचान और प्रतिष्ठा मिली। वह ना केवल देष के सबसे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे बल्कि उनका मानवीय पक्ष भी बहुत मजबूत था। पंत जब 18 साल के थे, तभी उन्होने गोपाल कृष्ण गोखले और मदन मोहन मालवीय को अपना आदर्ष मानते हुये भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस के सत्रों में एक स्वंय सेवक के रूप में काम करना शुरू कर दिया। वह दिसम्बर 1921 में कॉग्रेस में शामिल हुये और जल्द ही असहयोग आंदोलन में भाग लेने लगे। महात्मा गांधी के

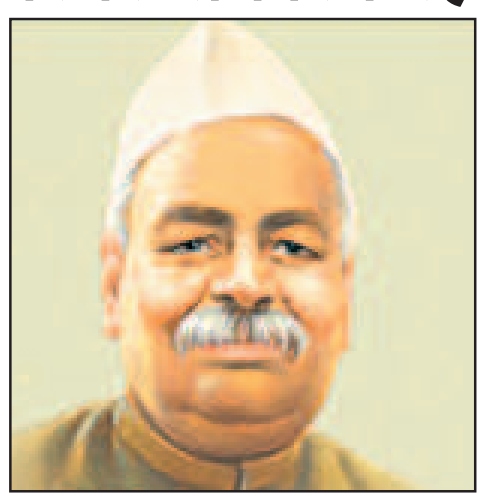

कार्यों से प्रेरित होकर नमक मार्च का आयोजन करने के कारण 1930 में उन्हे कैद कर लिया गया। ऐसा माना जाता है कि द्वितीय विष्व युद्ध के दौरान पंत ने महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस के गुटों के बीच समझौता कराने का प्रयास किया था।उस समय एक ओर गांधी जी और उनके समर्थक चाहते थे कि युद्ध के दौरान ब्रिटिष शासन का समर्थन किया जाए , वहीं सुभाषचन्द्र बोस गुट का मत था कि इस युद्ध की स्थिति का प्रयोग किसी भी तरह से ब्रिटिष राज को समाप्त करने के लिए किया जाए। भारत छोडों प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के कारण उन्हे 1942 में गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें मार्च 1945 तक कॉग्रेस कार्य समिति के अन्य सदस्यों के साथ अहमदनगर किले में कुल तीन साल बिताने पड़े। आखिर कार खराब स्वास्थ्य के आधार पर वह जेल से निकलने में सफल रहे। भारत रत्न गोविंद वल्लभ पंत, संयुक्त प्रांत के प्रधान (1937 से 1939 तक) उत्तर प्रदेष के पहले मुख्यमंत्री (1946 से 1954 तक) और केंद्रीय गृहमंत्री (1955 से 1961 तक) को 57 में लोक सेवा के लिए सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया। इसके अलावा वे राज्य सभा के नेता भी रहे थे। स्वतेत्रता प्राप्ति के बाद,वह उत्तरप्रदेष के पहले मुख्यमंत्री बने। इसके अलावा वे राज्यसभा के नेता भी रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, वह उत्तर प्रदेष के पहले मुख्यमंत्री बने। महान देषभक्त, कुषल प्रषासक, सफल वक्ता, तर्क के धनी एवं उदारमना डॉ पंत ने जमींदारी प्रथा को समाप्त करने , वन संरक्षण, महिलाओं के अधिकारों , आर्थिक स्थिरता और सबसे कमजोर समूहों की आजीविका की सुरक्षा जैसे प्रमुख सुधारों को अंतिम रूप दिया था। बाद में उन्होने भारतीय नागरिकों लोकतांत्रिक सषक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुये केंद्रीयगृह मंत्री के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को भी उचित रूप से निभाया।हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का भी उन्होने समर्थन किया।

छुआछूत का भेदभाव खत्म करने वाले माधवन

टी के माधवन
जन्म-2 सितंबर 1885
मृत्यु -27 अप्रैल 1930

आजादी का संघर्ष महज एक राजनितिक आंदोलन नही था बल्कि वह एक राष्ट्रीय पुनरूत्थान और सामाजिक सांस्कृतिक जागृति का आहान भी था केरल के वायकोम मे अस्पृष्यता के खिलाफ ऐसे ही आंदोलन के नायक थे माधव।

टी के माधवन ना सिर्फ एक भारतीय समाज सुधारक, पत्रकार, क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थे बल्कि एक ऐसे पक्के गांधीवादी भी थे, जिन्होने ना सिर्फ अहिंसावादी तरीके से अस्पृष्यता के खिलाफ संघर्ष का नेतृत्व किया बल्कि वायकोम सत्याग्रह को सफल भी बनाया। उनका जन्म 2सितंबर 1885 को केरल के कार्तिकपल्ली में एक संपन्न परिवार मे हुआ था और प्यार से लोग टी के कह कर बुलाते थे। उनके पिता का नाम केसवन चन्नार और मां का नाम उम्मीनी अम्मा था। आजादी का संघर्ष महज एक राजनितिक आंदोलन नही था, बल्कि यह एक राष्ट्रीय पुनरूत्थान और सामाजिक-सांस्कृतिक जागृति का आहान भी था। ऐसे भी उन्होने अस्पृष्यता कुपथा के खिलाफ वायकोम सत्याग्रह (1924-25) चलाया और

इस सिलसिले में उन्होने केरल के तिरूनेलबेली में महात्मा गांधी से मुलाकात भी की।

उन्होने महात्मा गांधी से सहायता मांगी और उन्हे वायकोम चलने के लिए राजी किया। वायकोम सत्याग्रह केरल के पिछड़े वर्ग के लोंगो का एक संघर्ष था। वे लोग दक्षिण केरल के एक छोटे से शहर में मंदिर की सड़कों पर चलने के अपने अधिकार की मांग को लेकर संघर्षरत थे। ऐसा माना जाता है कि यह टी के माधवन का ही प्रभाव था कि महात्मा गांधी इस मुद्दे को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एजेण्डे में शामिल करने के लिये सहमत हुये। और अपना समर्थन दिया। वायकोम सत्याग्रह में भाग लेने के कारण 1924 में उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया।इतना ही नही माधवन के साथ कई अन्य सत्याग्रहियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया।जिसके बाद इस सत्याग्रह के समर्थन में पूरे देष से स्वंय सेवक वायकोम पहुंचने लगे। इस आंदोलन के बारे में पुरे भारत में प्रमुखता से चर्चा होने लगी।और दूर-दूर से लोग इसका समर्थन करने लगे। आखिरकार मार्च 1925 में गांधी जी के नेतृत्व में त्रावणकोण की महारानी से मंदिर में प्रवेष के बारे में आंदोलनकारियों का समझौता संभव हो पाया।

दरअसल, माधवन एक कुषल नेतृत्वकर्ता के साथ-साथ एक अच्छे वक्ता और लेखक भी थे। जो दमदार तरीके से अपनी बात रखने के लिये जाने जाते थे।उन्होने देषाभिमानी नामक एक अखबार शुरू किया था। जिसमें वह लिखते भी थे ताकि लोगों तक अपनी बात पहुंचाई जा सके।और उन्हे जागरूक किया जा सके। उन्होने 1925 में कानपुर में आयोजित कांग्रेस के सम्मेलन में भी भाग लिया था। उनके सम्मान में चेट्टीकुलंगारा में एक स्मारक बनाया गया है। 1964 में नांगियारकुलंगारा में उनके नाम पर एक कॉलेज भी खोला गया है।

जिन्हें शिक्षक कहलाना ज्यादा पसंद था

एक आदर्श राजनेता,देरदृष्टा राजनायिक, दर्शनशास्त्री, मानवतावादी। कई रूपों में इस देश के मान और सम्मान की पताका विदेशी धरती तक आलोकित करने वाले डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन। लेकिन इन सबसे बढ़कर देश ने उन्हें एक शिक्षक के रूप माना। दरअसल हमारे शास्त्रों में ही कहा गया है- आचार्य देवो भवः। यानी शिक्षक ईश्वर के समान है।इसलिए एक शिक्षक से बड़ा सम्मान कुछ हो भी नहीं सकता और डॉ. राधाकृष्णन को यही सम्मान हासिल है। इसलिए दनके जन्म दिन 05 सितम्बर पर भारत शिक्षक दिवस मनाकर उन्हें नमन करता है.....

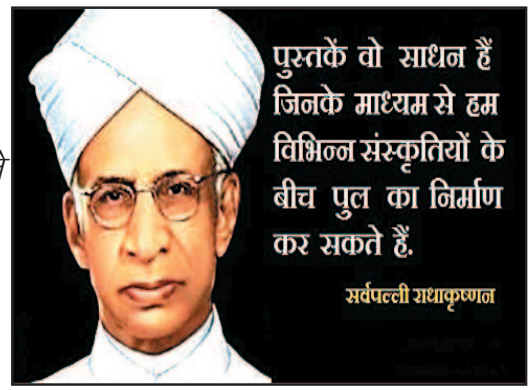

डॉ राधाकृष्णन कहते थे- शिक्ष कवह नही जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। वो जीवनभर इसी सिद्धांत पर चले।आज जब भारत 34 साल बाद मिली नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ भविष्य के साथ कदमताल के लिये तैयार है, तो राधकृष्णन की यह बातें और भी प्रासंगिक हो जाती हैं। वर्ष 1962 की बात है, कुछ मित्रों ने डॉ राधाकृष्णन से उनका जन्मदिन मनाने की अनुमति मांगी। डॉ राधाकृष्णन ने अपने मित्रों से कहा कि उनहे प्रसन्नता होगी अगर उनके जन्मदिन को शिक्षकों को याद करते हुये मनाया जाए। इसके बाद 1962 से हर साल 05 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। तमिलनाडु के तिरूतिनी गांव में 05 सितम्बर 1888 को एक ब्राहम्ण परिवार में जन्में डॉ राधाकृष्णन की स्कूली शिक्षा क्रिश्चियन मिशनरी स्कूल में हुई। मद्रास कॉलेज में अपने पांच साल के अध्ययन में डॉ राधाकृष्णन भारतीय दर्शन के साथ-साथ पश्चिमी दर्शन भी पढ़ते रहे। 1909 में 20 साल की उम्र में उनको मद्रास यूनिवर्सिटी के फिलॉसफी विभाग में नौकरी मिल गई। 1929 में वो ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के हैरिस मेनचेस्टर कॉलेज में बतौर प्रिंसिपल चले गये। 1931 में वे भारत लौटकर आंध्र यूनिवर्सिटी में कुलपति बने। 1936 में वो ऑक्सफोर्ड पढ़ाने लौट गये। बात वर्ष 1926 की है। स्वामी विवेकानंद के अमेंरिका और यूरोप दौरे को 33 साल हो चुके थे। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ फिलोसफी का आयोजन था। डॉ राधाकृष्णन ने इसमें भाग लिया। डॉ राधाकृष्णन ने पश्चिम में उनकी भाषा में भारतीय दर्शन समझाना शुरू किया। पश्चिम में कई दर्शन शास्त्री इस बात से हैरान थे कि भारत का कोई दार्शनिक पश्चिम के दर्शन पर इतनी अच्छी पकड़ रखता है। वो ब्रिटिश अकेडमी में चुने जाने वाले पहले भारतीय फेलो बने। और 1948 में यूनेस्को के चेयरमेंन भी बने थे। डॉ राधाकृष्णन भारतीय संविधान सभा में भी चुने गयें।लेकिन उसी समय रूस के मोर्चे पर भारत को एक ऐसे विद्धान की जरूरत थी, जो दोनों देषों के रिश्ते और प्रगाढ़ कर सके। इसलिए 1949 में उन्हे सोवियत यूनियन में भारत का राजनायिक बनाकर भेजा गया।।1952 में डॉ राधाकृष्णन को भारत का पहला उपराष्ट्रपति बनाया गया।1962 में डॉ राजेन्द्र प्रसाद के बाद वे भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने । राष्ट्रपति बनने के बाद डॉ राधाकृष्णन ने स्वैच्छिक आधार पर वेतन से कटौती कराई थी उल्होने घोषणा की कि सप्ताह में दो दिन कोई भी व्यक्ति उनसे पूर्व बिना अनुमति के मिल सकता है। डॉ राधाकृष्णन अपने जीवन के 40 वर्ष एक शिक्षक के रूप् में व्यतीत किए। शिक्षक जगत के साथ समाज में उनके योगदान को देखते हुये उन्हे आर्डर आफ मेंरिट, नाइट बैचलर , टेम्पलटन पुरस्कार से नवाजा गया। अंग्रेज सरकार ने उन्हें नाइटहुड की उपाधि भी दी थी।उन्हे भारत रत्न से भी नवाजा गया।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया जिनके जन्म दिवस को अभियंता दिवस के रूप में मनाया जाता है

ईट, गारे और लोहे का इस्तेमाल कर नकनीकी कौशल के सहारे सिर्फइमारतें ही नहीं बनती, बल्कि इसमें समाज के हित को भी जोड़ दिया जाए तो देश की तरक्की का नया रास्ता भी तैयार होता है। बात उस समय की है जब भारत अंग्रेजी गुलामी का दंश झेल रहा था। उस दौर में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने अपनी इंजीनियरिंग के कौशल के साथ आम लोगों के हित का ऐसा गारा तैयार किया कि अंग्रेज भी उनकी तारीफ किये बिना नहीं रह सके। ऐसे महान व्यक्तित्व के जन्म दिवस 15 सितम्बर पर देश इंजीनियर दिवस मनाकर उन्हे याद करता है.....

ब्रिटिश भारत में एक रेलगाड़ी चली जा रही थी जिसमें ज्यादातर अंग्रेज सवार थे। एक डिब्बे में एक भारतीय यात्री गंभीर मुद्रा में बैठा था। सांवले रंग और मंझले कद का वो यात्री सादे कपड़ों में था और वहां बैठे अंग्रेज उन्हे अनपढ़ समझकर मजाक उड़ा रहे थे। अचानक उस व्यक्ति ने उठकर गाड़ी की जंजीर खींच दी। ट्रेन कुछ ही पलों में रूक गई। सभी यात्री चेन खींचने वाले को भला -बुरा कहने लगे। थोडी देर में गार्ड आ गया और सवाल किया जंजीर किसने खींचीं? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, मैंने। वजह पूछी तो उन्होने बताया, मेंरा अंदाजा है कि यहां से लगभग कुछ देरी पर रेल की पटरी उखडी हुई है। गार्ड ने पुछा, आपको कैसे पता चला? वो बोले, गाड़ी की स्वाभाविक गति में अंतर आया है और मैं एक इंजीनियर हूँ, आवाज से मुझे खतरे का आभास हो रहा है गार्ड उन्हे लेकर जब कुछ दूर पहुँचा तो देखकर दंग रह गया कि वास्तव में एक जगह से रेल की पटरी के जोड़ खुले हुए हैं वो सांवले से व्यक्ति थे मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया। 15 सितम्बर 1861 को कर्नाटक के चिक्कबल्लापुर में जन्में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के पिता संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। लेकिन जब मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया 12 वर्ष के थे , उनके पिता का निधन हो गया। परिवार आर्थिक संकट से जूझ रहा था, लिहाजा मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया गांव के सरकारी स्कूल में ही पढ़ते रहे। बेंगलुरू के सेंट्रल कॉलेज से बी.ए. करने के बाद उन्होने कुछ समय शिक्षक के रूप में भी काम किया। उनकी योग्यता देख मैसूर

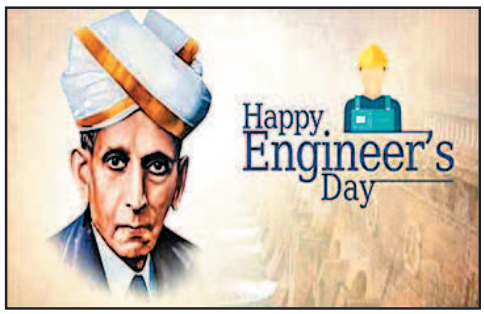

सरकार ने उन्हें स्कॉलरशिप दी, जिसके बाद उन्होने पुणे के साइंस कॉलेज में सिविल इंजीनियर के पाठ्यक्रम में दाखिला लिया, 1883 में उन्होने एलसीई की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया,जिसे वर्तमान समय में बीई की उपाधि के समान माना जाता है। इंजीनियर बनते ही उनकी योग्यता देख महाराष्ट्र सरकार ने इन्हें नासिक जिले के सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया। इंजीनियर के रूप में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को असली ख्याती मिली। पुणे के खड़कवासला बांध की भंडारण क्षमता को विना ऊंचाई बढ़ाए बढ़ोतरी करने से। बांधों के जल भंडारण स्तर में वृद्धि करने के लिये मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने स्वाचालित जलद्वारों का उपयोग खड़कवासलाबांध पर किया था। वर्ष 1909 में मैसूर राज्य का मुख्य अभियंता नियुक्त किया गया। कृष्णराज सागर बांध के निर्माण के कारण मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का नाम पमरे विश्व में सबसे अधिक चर्चा में रहा था। इसका निर्माण स्वतंत्रता से करीब 40 वर्ष पहले हुआ था। वर्ष 1912 में उन्हे मैसूर राज्य का दीवान निसुक्त किया गया। उन्होने चंदन तेल फैक्टरी, साबुन फैक्टरी, धातु फैक्टरी, क्रोम टेंनिंग फैक्टरी प्रारंभ किया। बांध निर्माण के साथ-साथ औद्योगिक विकास में भी मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का योगदान कम नही है। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया औद्योगिक विकास के समर्थक थे। वह उन शुरूआती लोगों में से एक थे, जिन्होने बेंगलुरू स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान में धातुकर्म विभाग, वैमानिकी,औद्योगिक दहन एवं इंजीनियरिंग जैसे नए विभागों को आरंभ करने का स्वप्न देखा था। वर्ष 1918 में मैसूर के दीवान के रूप में सेवानिवृत्त हो गये। अपने इनक कार्यों के लिए मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को कर्नाटक का भागीरथ भी कहा जाता है। उन्हे 1955 में देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया।101 वर्ष की दीर्घायु में काम करते रहने वाले मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का कहना था कि - जंग लग जाने से बेहतर है, काम करतक रहना। अदभूत इंजीनियरिंग कला के उनके दिखाये रास्ते पर भारत आज आगे बढ़ रहा है। चाहे चिनाब नदी पर दुनिया का सबसे ऊंचा ब्रिज हो या अटल टनल से लेकर बॉर्डर के नजदीकी इलाके या फिर देश में सुगम राजमार्गों का जाल। बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण के साथ देश के विकास का रास्ता जो मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने दिखया था, भारत उसी पथ पर अग्रसर है।

आंगनबाड़ी केन्द्रों में योग-व्यायाम से कुपोषण से जंग

गर्भवती-धात्री माताएं, किशोरी बालिका और बच्चों ने सीखी योगक्रियाएं

रायपुर । राष्ट्रीय पोषण माह के तहत प्रदेश में सितम्बर माह में चरणवार गतिविधियां चल रही हैं। इस दौरान आंगनबाड़ियों में योग आयोग के सहयोग से गर्भवती महिलाओं, धात्री माता, किशोरी बालिका और बच्चों को योग का महत्व समझाते हुए योगाभ्यास और व्यायाम पर भी जोर जा रहा है। अभियान के दौरान योग प्रशिक्षकों ने बच्चों को प्राणायाम और ताड़ासन, कटिचक्रासन, वृक्षासन जैसे कई योगासन सिखाए हैं। इसके साथ ही स्कलों में पढ़ रही किशोरी बालिकाओं को योग से जोड़ते हुए स्वस्थ जीवन शैली का महत्व बताया जा रहा है।

स्वस्थ्य जीवन शैली के लिए योग के महत्व को देखते हुए इस वर्ष पोषण अभियान में योग को भी

शामिल किया गया है। लोगों को कुपोषण से बचाने के लिए योग, ध्यान व आसन के साथ सही खानपान और उसके पाचन संबंधी जानकारियां दी गई हैं। इसके साथ ही महिलाओं को प्रसव पूर्व देखभाल के साथ छोटी-मोटी बीमारियों से लड़ने के लिये आयुष पद्धति (घरेलु पद्धति) के बारे में समझाया जा रहा है।

भूदान आंदोलन के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे

विनोबा भावे
जन्म- 11 सितम्बर 1895
मृत्यु - 15 नवम्बर 1982

माना जाता है कि महात्मा गांधी के जीवन में आध्यात्म का बहुत अधिक महत्व था। वही अध्यात्म, जिससे सत्याग्रह का महान विचार निकला था। कहा जाता है महात्मा गांधी की आध्यात्मिक विरासत का अगर कोई सच्चा वारिस था तो वह, विनोबा भावे ही थे। जिनका जन्म 11 सितम्बर 1895 को महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र के गागोदा गांव में हुआ था। उनका नाम विनायक नरहरि भावे था। विनोबा भावे ना सिर्फ एक स्वतंत्रता सेनानी थे बल्कि सामाजिक कार्यकत्र और प्रसिद्ध गांधीवादी नेता भी थे। जिन्होने देष में भूदान आंदोलन का आधार रखा था। गांधी जी ने उनकी लगन देखकर ही उन्हे वर्धा आश्रम की जिम्मेदारी सौपी थी। साल 1940 तक विनोबा भावे को कम ही लोग जानते थे, लेकिन 05 अक्टूबर 1940 को महात्मा गांधी ने उनका परिचय राष्ट्र से कराया। गांधी जी ने एक बयान जारी किया और उनको पहला सत्याग्रही बताया। भावे पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आंदोलन के लिये चुना था।

महात्मा गांधी के प्रभाव के कारण ही विनोबा भावे ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था और वह असहयोग आंदोलन में शामिल हुये। विनोबा भावे की स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी से

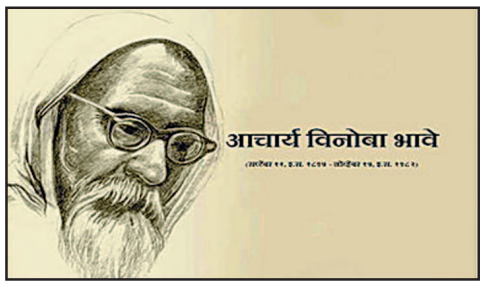

ब्रिटिष शासन क्रोधित हो उठा था। और उनपर ब्रिटिष शासन का विरोध करने का आरोप लगाया गया। सरकार ने उनको छह महीने के लिये जेल भेज दिया। उनको धुलिया स्थित जेल भेज दिया गया जहाँ उन्होने कैदियों को मराठी में भगवद गीता के विभिन्न विषयों को पढ़ाया। इतना ही नहीं वह खुद भी चरखा कातते थे। और दूसरों से भी ऐसा करने की अपील करते थे। कम्युनिटी लीडरषिप के लिये उन्हे रेमन मैग्सेस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।और वो पुरस्कार जीतने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्हें संस्कृत, कन्नड़, उर्दू और मराठी समेंत करीब 7 भाषाओं का ज्ञान था। उन्होने कहा था कि जो खुद पर काबु पा लेता है, वो दुनिया पर काबु पा सकता था। आचार्य विनोबा भावे गांधी जी के एक ऐसे आदर्ष षिष्य थे जो अपने देखभाल पूर्ण व्यवहार और त्याग व सेवा की भावना के साथ भारतीयता के सार थे। गांधी जी की तरह आचार्य विनोबा भावे बिना जबरदस्ती, बिना हिंसा के भूदान आंदोलन के जरिये बदलाव लाये और साबित किया कि लोगों की सक्रिय भागीदारी से सकारात्मक,दीर्घकालिक बदलाव लाये जा सकते हैं। विनोबा जी ने 14 साल में 70,000 किलोमीटर की लंबी यात्रा की और इस क्रम में भूमिहीन किसानों के लिये 42 लाख एकड़ जमीन दान दी गई।पोचमपैल्ली के श्री वेदिरेराम चंद्र रेड्डी ऐसे पहले शख्स थे जिन्होने विनोबा जी के आहवान पर उन्हे 100 एकड़ जमीन दान में दे दी थी। विनोबा का सर्वोदय आंदोलन और ग्रामदान अवधारणा ग्राम पुनर्निर्माण और ग्रामीण उत्थान, गांधीवादी आदर्ष का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह गांवों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिये एक सहकारिता प्रणाली थी। आने वाली पीढ़िया जिंदगी जी सकें, इसलिये उन्होने किताब लिखी, आश्रतम खोले, मूल्य गढ़े। विनोबा वो इंसान थे, जिनमें गांधी के मृत्यू के 37 साल बाद तक लोग उनका अक्स देखते रहे। विनोबा भावे के प्रति गांधी जी के लगाव का जिक्र करते हुये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था, 1918 में विनोबा भावे को याद करते हुये महात्मा गांधी ने लिखा कि मुझे नहीं पता कि आपकी प्रषंसा कैसे करू। आपका प्यार और आपका चरित्र मुझे आकर्षित करता है और आपका आत्म मूल्यांकन भी । इसलिये आपके मूल्य को मापने के लिये उपयुक्त नहीं हूँ।

लोकतंत्र को कमजोर करते चुनावी वादे

इन दिनों राजनीतिक दलों की ओर से चुनाव के दरम्यान तमाम योजनाओं के लुभावने वादों पर बहस तेज है। कुछ वर्षों से राजनीतिक दल मतदाताओं के खाते में धन जमा कराने का वादा करने लगे हैं। इससे पहले लंबे समय तक रुपये और शराब बांटने का सिलसिला चलता रहा है। चूंकि अब पुलिस और आबकारी विभागों की सख्ती तथा आयकर विभाग की निगरानी के चलते नोट फॉर वोट देना आसान नहीं रहा है।

पकड़े जाने पर खुद की, और पार्टी की बदनामी से पराजय का खतरा भी रहता है। ऐसे में सियासी पार्टियां सत्ता में आने पर घूस का लालच देने से नहीं चूकतीं। घूस का यह सिलसिला दक्षिण भारतीय राज्यों में तो दशकों से चल रहा है। कहीं खुलेआम साड़ियां बांटी जाती थीं, तो कहीं मोबाइल फोन बंटते थे। कुछ उदाहरण ऐसे भी थे, जब उम्मीदवार मतदाताओं को दुपहिया वाहन देता था। पार्टियों के घोषणा पत्रों में भी लैपटॉप से लेकर साइकिल तक देने का वादा किया जाता है।

जो दल चुनाव जीतने के बाद अस्पताल में दवाएं और डॉक्टर नहीं देता, स्कूलों में अच्छी पढ़ाई और शिक्षक नहीं देता, सड़क, पानी, बुनियादी सुविधाएं नहीं देता, वह स्पेशल ट्रेन चलाकर बूढ़ों को तीर्थ कराता है, लैपटॉप बांटता है, जूते बांटता है, बंदूकों के लाइसेंस बांटता है, लड़कियों की शादी में कन्यादान-किट देता है। हमारी चुनाव प्रणाली को कोई एतराज नहीं होता। मतदाता के तौर पर राजनीतिक दलों की गलतियों को हम भूल जाते हैं। हम जैसे-जैसे साक्षर और आधुनिक होते जा रहे हैं, दिमागी तौर पर और सिकुड़ते जा रहे हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय ने हाल ही में कहा है कि नागरिकों के अधिकार पहनने के आभूषण नहीं हैं। लोगों को इनका उपयोग करना चाहिए। अदालत ने नकद राशि मतदाताओं के खातों में डालने के एलानों पर चुनाव आयोग और केंद्र सरकार से कैफियत मांगी है। न्यायालय ने एक याचिका पर यह स्पष्टीकरण तलब किया है, जिसमें कहा गया है कि जन प्रतिनिधित्व कानून की धारा 123 के तहत यह भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है। भारतीय संविधान भी श्रम और उत्पादकता तय किए बिना नकद बांटने की मंशा का समर्थन नहीं करता। यदि सारी पार्टियों ने ऐसा करना शुरू कर दिया, तो यह आलसियों का देश बन जाएगा और बिना मेहनत पेट भरने का आदी हो जाएगा। (वैसे काफी हद तक हम भारतीय ऐसे ही हैं) याचिका दाखिल करने वालों का कहना था कि 2019 के चुनाव में एक राष्ट्रीय और एक प्रादेशिक पार्टी ने अपने घोषणापत्रों में न्याय योजना के तहत 72,000 रुपये हर साल मतदाता को देने का वादा किया था। इसकी विस्तृत व्याख्या की जाए, तो यह माना जाना चाहिए कि किसी घर में माता-

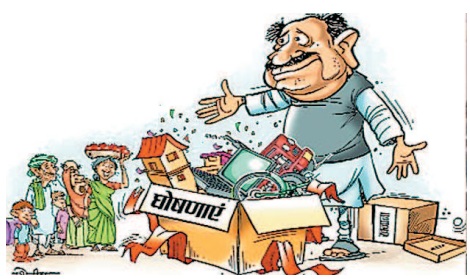

पिता और नौजवान बेटा-बेटी है, तो करीब-करीब तीन लाख रुपये हर साल उन्हें घर बैठे मिलेंगे। एक मध्यमवर्गीय परिवार 25 हजार रुपये में अपना गुज़ारा आराम से कर लेता है। करोड़ों परिवार तो इतना भी नहीं कमाते। इस तरह का पैसा उन्हें नाकारा बना देता है। राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के लिए भी यह अत्यंत घातक है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस संबंध में निर्वाचन आयोग को भी आड़े हाथों लिया है। उसने कहा कि आयोग केवल नोटिस और आदेश जारी न करे। उसे कार्रवाई करने का पूरा अधिकार है और उसे यही करना भी चाहिए। लेकिन क्या सिर्फ न्यायालय इस चुनावी भ्रष्टाचार को रोक सकता है? दशकों से चुनाव के दौरान सीमा से अधिक खर्च होता है। उम्मीदवारों ने पैसे बहाने के नए चोर दरवाजे खोज लिए हैं। सब जानते हैं, लेकिन सिलसिला नहीं रुक रहा है। जिस मुद्दे पर उच्च न्यायालय का द्वार खटखटाया गया है, वह दरअसल चुनाव आयोग का काम है। जब-जब भारतीय चुनाव आयोग ने अपनी नैतिक और विधायी शक्ति का इस्तेमाल करने में कंजूसी की है, तब-तब राजनीति को विकृत करने वाले तत्वों का हौसला बढ़ा है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक साल
अब व्यावहारिक शिक्षा की ओर बढ़ रहा देश

बीते वर्ष नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ भारत ने षिक्षा व्यवस्था में एक नये मील के पत्थर कर ओर कदम बढ़ाए थे। 34 साल के लंबे इंतजार के बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति दरअसल, उस सपने को पूरा करने की शुरूआत थी, जिसकी नींव प्रधान मंत्री नरेंन्द्र मोदी ने नए भारत के रूप में रखी है। सैद्धांतिक शिक्षा को व्यावहारिक शिक्षा में बदलने की इस दस्तक को 29 जुलाई को एक वर्ष पूरा हुआ तो प्रधानमंत्री मोदी ने फिर एक बार नई सौगातों के साथ भविष्य की शिक्षा व्यवस्था की ओर देश के आगे बढ़ने का मार्ग किया तैयार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी मिलने का एक वर्ष 29 जुलाई को पूरा हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने खुद शिक्षा क्षेत्र से जुडे विशेषज्ञों , छात्रों और शिक्षकों से सीधी बात की। उन्होने कहा, भविष्य में हत कितना आगे जाएंगे,कितनी ऊंचाई प्राप्त करेंगे,ये इस बात पर निर्भर करेगा कि हम अपने युवाओं को वर्तमान में यानि आज कैसी शिक्षा दे रहे हैं, कैसी दिशा दे रहे हैं, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भूमिका राष्ट्रनिर्माण के इस यज्ञ में सबसे अहम् है। संवाद में एक ओर प्रधानमंत्री मोदी ने बीते एक वर्ष नई शिक्षा नीति के तहत् उठाये गये कदमों के बारे में विस्तार से बताया तो साथ ही नई सौगातों की घोषणा भी की।

एक वर्ष बाद नई सोच का: नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत् एक वर्ष में की गई वे पहल जिनका जिक्र प्रधानमंत्री ने किया

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ऑनलाईन शिक्षा को प्राथमिकता और प्रोत्साहन दोनों दिया गया है। जिसके सफल परिणाम कोविड महामारी के दौरान भी सामने आए। पीएम-ई-विद्या कार्यक्रम के अन्तर्गत ऑनलाईन टेनिविजन कम्युनिटी रेडियों के माध्यम से पढ़ाई-लिखाई जारी रही।
- वन नेशन-वन डिजिटल प्लेटफार्म से प्रेरित दीक्षा कार्यक्रम में स्कूल पाठ्यक्रम पर आधारित 1 लाख 85 हजार से अधिक ई-सामग्री 32 भाषाओं में उपलब्ध कराई गई। एक वर्ष में इस प्लेटफार्म पर हिट्स की संख्या 200 करोड़ से बढ़कर 2300 करोड़ हो गई।
- कोविड काल के बीच जेईई-नीट की परीक्षाएं ऑनलाईन हुई, जिससे किसी भी छात्र का कोई भी सत्र व्यर्थ नही गया।
- यूजीसी पे ऑनलाईन शिक्षण के नए-दिशा निर्देश जारी किये। ऑनलाईन पाठ्यक्रमों की संख्या 37 से बढ़कर अब 216 हो गई है। संस्थाओं की संख्या 7 से बढ़कर 41 हो गई है।
- ऑनलाईन शिक्षा के लिये स्वंय (SWAYAM) पोर्टल, जिस पर वर्तमान में 817 डिग्री और डिप्लोमा कोर्स उपलब्ध है। पिछले वर्ष में 54 लाख से अधिक छात्रों ने इस पर अपना पंजीकरण कराया।

नए भारत के भविष्य की नींव तैयार करने वाली नई सौगात

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत् नई पहल जिनकी घोषणा प्रधानमंत्री ने की

- **विद्या प्रवेश:** कक्षा एक की तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिये नई नीति के सुझावों पर एनसीईआरटी द्वार बच्चों के लिये तीन माह का स्कूल तैयारी मॉडयूल-विद्या प्रवेश तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम में अक्षर,ध्वनि,शब्द,रंग आकार और संख्या सीखने के लिये रोचक गतिविधियां हैं। इसके द्वारा बच्चों की पूर्व साक्षरता , पूर्व गणना और सामाजिक कौशल का विकास होगा।
- **इंडियन साइन लैंग्वेज:** 3 लाख से ज्यादा बच्चे ऐसे हैं , जिन्हे सांकेतिक भाषाओं की जरूरत होती है। इसे समझते हुये भारतीय साइन लैंग्वेज को सब्जेक्ट का दर्जा दिया गया है। छात्र इसे भाषा के तौर पर भी पढ़ पाएंगे। हमारे दिव्यांग साथियों को मदद मिलेगी।
- **निष्ठा 2.0:** दुनिया का सबसे बड़ा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम , ताकि शिक्षक बच्चों की प्रतिभा को परख कर विकसित कर सके। प्राथमिक स्तर पर षिक्षकों के प्रशिक्षण के बाद अब निष्ठा अपने नवनिर्मित 68 मॉड्यूल द्वारा माध्यमिक स्तर के 10 लाख से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिये तैयार है।
- **सफल (स्ट्रक्चर्ड असेसमेंट फॉर एनालिसिस लर्निंग):** सीबीएसई के 25 हजार स्कूलों के ग्रेड 3,5, और 8 के 50 लाख बच्चों के लिये तैयार किया गया है। सफल का उपयोग छात्रों के बीच मूलभूत कौशल और बुनियादी सीखने के परिणामों की प्रगति का आंकलन करने के लिये किया जाएगा।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस:** यह नई दुनिया का ईंधन है। भारत की एआई रणनीति सभी के लिये सोच कर बनाई गई है। मंत्रालय, सीबीएसई, इंटेल इंडिया लेकर आया है ए आई फॉर ऑल। इस कार्यक्रम को लगभग 4 घंटों में पूरा किया जा सकता है।और यह 11 भाषाओं में उपलब्ध है।
- **एकेडमिक बैंक ऑफक्रेडिट:** यूजीसी ने इसे तैयार किया है। इसमें छात्र अपना अकादमिक खाता खोलेंगे। जिसमें उनके द्वारा अर्जित क्रेडिट किये जाएंगे। छात्र अपने खाते में जमा क्रेडिट का उपयोग डिग्री लेने में कर पाएंगे। यूजीसी द्वारा मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्जिट के लिये भी दिशा निर्देष जारी किये गये हैं।
- इस नई नीति से भारत में पढ़ने आये विदेशी बच्चों को भी हमारी सुदृण व्यवस्था का लाभ मिला है। एक तरफ निष्ठा के अन्तर्गत लगभग 24 लाख प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षित किये गये। कौशल विकास मंत्रालय द्वारा पिछले 1 वर्ष में 1 लाख से अधिक स्वास्थ्यकर्मी प्रशिक्षित किये गये हैं
- शिक्षा नीति के तहत् सार्थक की रचना हुई जो स्कूली शिक्षा के सुचारू क्रियान्वयन के लिये एक्शन प्लान है। इसी के तहत् राष्ट्रीय अभियान- निपुण की भी

शुरूआत हुई। जिसका लक्ष्य बच्चों को समझ के साथ पढ़ने और बुनियादी गणना की क्षमता को विकसित करना है।

- **क्षेत्रीय भाषा में इंजीनियरिंग प्रोग्राम:** इंजीनियरिंग के कोर्स का 11 भारतीय भाषाओं में ट्रांसलेशन के लिये टूल डेवलप किया जा चुका है। 8 राज्यों के 14 इंजीनियरिंग कॉलेज 5 भारतीय भाषाओं हिन्दी, तमिल, तेलगु, मराठी और बांग्ला में इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू करने जा रहे हैं।
- **उच्च शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण:** भारतीय और विदेशी उच्च शिक्षण संस्थानों के बीच परस्पर सहयोग बढ़े इसके लिये यूजीसी ने क्रेडिट ट्रांसफर के साथ उच्च शिक्षण संस्थानों के बीच परस्पर जुड़ाव के लिये दिशा निर्देश दिया है। भारतीय छात्रों का ग्लोबल शिक्षा का लाभ मिलेगा, वहीं विदेशी छात्रों के आने से विदेशी पटल पर हमारी शाख बढ़ेगी।
- **नेशनल डिजिटल एजूकेशन आर्किटेक्चर:** डिजिटल फर्स्ट की सोच पर आधारित शिक्षा का सबसे बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर होगा। यह ओपन स्पेस और ओपन स्टैंडर्ड पर आधारित होगा ताकि राज्य उद्यमी इसका इस्तेमाल करके इनोवेटिव रेडी एजूकेशन सोल्यूशन बनाएंगे। ये एक ऐसा डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर है, जहाँ टीचिंग, लर्निंग, प्लानिंग, गवर्नेंस का एक साथ जोडा जाएगा। जिसका लाभ देश के हर स्कूल से लेकर कॉलेज के विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक लक सकते हैं।
- **नेशनल एजूकेशनल टेक्नोलॉजी फोरम:** शिक्षा के विभिन्न आयामों तकनीक के इस्तेमाल के लिये एक राष्ट्रीय मंच का निर्माण है। यह प्रशासन, शिक्षण, मूल्यांकन, नियोजन आदि आयामों में तकनीक के इस्तेमाल पर राज्य और केन्द्र सरकार को परामर्श देगा। यह केजी से पीजी तक शिक्षण और सीखने के तरीके में रचनात्मक बदलाव लाएगा।
- स्कूल बैग के वनज और होमवर्क को कम करने के लिये दिशानिर्देश दिये गये। बच्चों का मानसिक और तनाव से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिये मनोदर्पण पोंटल और हेल्पलाईन नम्बर भी लांच किया गया है। षिक्षा नीति में कक्षा 6 से ही कोडिंग, डाटा साईंस, वित्तीय साक्षरता और हैंडीक्राफ्ट के वोकेशनल कोर्सेस को भी शामिल किया गया है।
- कक्षा 10 वीं 12 वीं के लिये सीबीएसई द्वारा योग्यतापरक चरणबद्ध तरीके से मूल्यांकन की शुरूआत की गई है।

छत्तीसगढ़ सरकार वनौषधियों से जुड़े उद्योगों की स्थापना के लिए हरसंभव सहायता देगी -भूपेश बघेल

बघेल विश्व फॉर्मासिस्ट दिवस पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार प्रदेश में वनौषधियों से जुड़े उद्योगों की स्थापना के लिए हरसंभव सहायता उपलब्ध कराएगी। इसके लिए कच्चा माल, जमीन, श्रम और जरूरी अधोसंरचनाएं सरकार प्राथमिकता से मुहैया कराएगी। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने आज इंडियन फॉर्मासिस्ट एसोशिएशन, छत्तीसगढ़ द्वारा राजधानी रायपुर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रेक्षागृह में विश्व फॉर्मासिस्ट दिवस के मौके पर आयोजित कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में वनौषधियां प्रचुर मात्रा में मौजूद है। यहां का 44 प्रतिशत भू-भाग वन क्षेत्र है, जहां विभिन्न प्रकार की वनौषधियां बहुतायत में मिलती हैं। उन्होंने फॉर्मासिस्टों को आह्वान करते हुए कहा कि वे यहां दवा और वनौषधि से संबंधित उद्योगों की स्थापना के लिए आगे आएं। स्वास्थ्य मंत्री श्री टी.एस. सिंहदेव तथा राज्यसभा सांसदद्वय श्रीमती छाया वर्मा और श्रीमती फूलोदेवी नेताम भी कॉन्फ्रेंस में शामिल हुईं।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने मुख्य अतिथि के रूप में कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि दुनिया के सभी दवा निर्माताओं का छत्तीसगढ़ में स्वागत है। यहां दवा उद्योग स्थापित करने के इच्छुक व्यक्ति या समूह राज्य के हों या राज्य के बाहर के हों, सरकार उन्हें सभी आवश्यक संसाधन, सुविधाएं और छूट प्रदान करेगी।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में स्थापित होने वाले वनौषधि इकाईयों को लघु वनोपज संघ द्वारा निर्धारित दरों पर ही कच्चा माल उपलब्ध कराया जाएगा। स्थानीय स्तर पर उत्पादित दवाईयों को आयुष एवं स्वास्थ्य विभाग बिना किसी निविदा के सीधे खरीद सकता है। मुख्यमंत्री ने कॉन्फ्रेंस में कहा कि जेनेरिक दवाईयों को लोकप्रिय बनाने में फॉर्मासिस्ट महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जेनेरिक दवाओं का उपयोग बढ़ाकर कम खर्चे में लोगों को इलाज उपलब्ध कराया जा सकता है। उन्होंने प्रदेश में कोरोना संक्रमण के नियंत्रण एवं रोकथाम में फॉर्मासिस्टों के साथ ही डॉक्टरों, नर्सों, तकनीशियनों, ग्राम पंचायतों, नगरीय निकायों, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक व स्वयंसेवी संगठनों तथा शासकीय अधिकारियों-कर्मचारियों के योगदान की खुले दिल से तारीफ की। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड-19 के कठिन दौर में समाज के सभी वर्गों का महत्वपूर्ण सहयोग मिला। पूरा प्रदेश एकजुट होकर कोरोना से लड़ा और इस पर विजय पाई।

स्वास्थ्य मंत्री श्री टी.एस. सिंहदेव ने कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ पूरे देश में एक 'मॉडल स्टेट' के रूप में उभर रहा है। यहां होने वाले नवाचारों और नई पहलों पर पूरे देश की नजर रहती है। कोरोना काल में डॉक्टरों और अन्य मेडिकल स्टॉफ के साथ फॉर्मासिस्टों ने भी खतरों के बीच बहुत सराहनीय काम किया है। कोरोना के विरूद्ध लड़ाई के दौरान पूरी दुनिया में दवाईयों के लगातार निर्माण, पहुंच और वितरण सुनिश्चित करने में फॉर्मासिस्टों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संक्रमण के खतरों के बीच मेडिकल परिसरों में दवा दुकानें और फॉर्मासिस्ट निरंतर लोगों की सेवा में मुस्तैद रहे। लोगों तक जीवनरक्षक दवाईयों की पहुंच सुनिश्चित करने में फॉर्मासिस्ट जरूरी कड़ी है। शासकीय एवं निजी चिकित्सा संस्थानों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने में फॉर्मासिस्ट की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। श्री सिंहदेव ने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र की जरूरतों पर मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने सहानुभूतिपूर्वक विचार किया है। उन्होंने उदारता से नए पदों के सेट-अप और नई भर्तियों की मंजूरी दी है। फॉर्मासिस्टों के भी 187 पदों पर भर्ती के विज्ञापन जारी किए गए हैं। कॉन्फ्रेंस में उल्लेखनीय कार्य करने वाले फॉर्मासिस्टों को सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री एवं अन्य अतिथियों द्वारा 'फॉर्मासिस्ट बुक' का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ हॉस्पिटल बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. राकेश गुप्ता, इंडियन फॉर्मासिस्ट एसोशिएशन, छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष डॉ. विनोद कुमार वर्मा, एसोशिएशन के पदाधिकारीगण सर्वश्री राहुल वर्मा, वैभव शास्त्री और संदीप चन्द्राकर सहित प्रदेश भर से बड़ी संख्या में आए फॉर्मासिस्ट भी मौजूद थे।

छत्तीसगढ़ में एक साथ 7 खेल अकादमियों की ऐतिहासिक शुरूआत

रायपुर । मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने आज राज्य के खिलाड़ियों के लिए एक साथ 7 खेल अकादमियों की ऐतिहासिक शुरूआत की। इनमें से बिलासपुर में 4 तथा रायपुर में 3 खेल अकादमी आज विधिवत प्रारंभ हुई। बिलासपुर में हॉकी, तीरंदाजी, एथलेटिक्स और कबड्डी अकादमी तथा रायपुर में तीरंदाजी, बालिका फुटबाल एवं बालक-बालिका एथेलेटिक्स अकादमी का शुभारंभ हुआ। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने आज यहां अपने निवास कार्यालय में आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम के माध्यम से प्रदेश के खिलाड़ियों को बड़ी सौगात देते हुए बिलासपुर और रायपुर में लगभग 42 करोड़ 14 लाख रूपए की लागत वाली नई खेल सुविधाओं का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। बिलासपुर में हांकी, तीरंदाजी, एथलेटिक्स की बोर्डिंग एवं कबड्डी (बालिका) अकादमी तथा रायपुर में तीरंदाजी की बोर्डिंग, फुटबाल (बालिका) एवं एथलेटिक्स (बालक-बालिका) की डे-बोर्डिंग अकादमी कुल 370 सीटर है। जिसमें 180 बोर्डिंग सीट एवं 190 डे-बोर्डिंग सीट शामिल है।

राजकीय सम्मान के साथ स्व.युद्धवीर सिंह जूदेव का अंतिम संस्कार किया गया

जशपुरनगर। पूर्व संसदीय सचिव एवं पूर्व विधायक स्व. युद्धवीर सिंह जूदेव का आज बाकी नदी स्थित मुक्तिधाम में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। सुरक्षा बल के जवानों द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर देते हुए सलामी दी। केन्द्रीय राज्य मंत्री श्रीमती रेणुका सिंह, लोकसभा सांसद श्रीमती गोमती साय, खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री अमरजीत भगत, संसदीय सचिव एवं कुनकुरी विधायक श्री यूडी मिंज और जशपुर विधायक श्री विनय भगत ने युद्धवीर को पुष्प चक्र अर्पित करते हुए विनम श्रद्धांजलि दिए। सभी ने ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति और परिजनों को दु:ख की इस घड़ी को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। अंतिम विदाई के दौरान पूर्व अनुसूचित जनजाति आयोग के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदकुमार साय, नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक, विधायक एवं पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल, पूर्व सांसद रणविजय सिंह जूदेव, प्रदेश अध्यक्ष

विष्णुदेव साय, पूर्व गृह मंत्री ननकी राम कंवर, पूर्व मंत्री अजय चन्द्राकर, रामविचार नेताम, जिला पंचायत अध्यक्ष रायमुनी भगत, कलेक्टर श्री महादेव कावरे, पुलिस अधीक्षक श्री विजय अग्रवाल, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री एस.के.मण्डावी, पूर्व मंत्री गणेश राम भगत, श्री रामप्रताप सिंह, प्रबल प्रताप सिंह जूदेव, विक्रमादित्य सिंह जूदेव, ओपी चौधरी, परिजन, जनप्रतिनिधिगण, गणमान्य नागरिक और जिला प्रशासन के अधिकारीगण ने श्रद्धांजलि अर्पित की। स्व. युद्धवीर सिंह जूदेव का बैंगलूरू के एक निजी अस्पताल में 20 सितम्बर 2021 प्रात: 4 बजे निधन हो गया था।

बुलेट से बुशर्ट तक दंतेवाड़ा का सफर : हिंसा पर हौसले की जीत से बदली तस्वीर

सात करोड़ रूपये से अधिक के एक लाख 27 हजार रेडीमेड कपड़ों की हुई सप्लाई

रायपुर । कुछ सालों पहले यह कल्पना करना मुश्किल था कि छत्तीसगढ़ के दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा जैसे सुदूर आदिवासी बहुल जिले में तैयार ब्रांडेड कपड़े बैंगलौर, दिल्ली जैसे बड़े शहरों में भेजे जाएंगे। धुर नक्सल प्रभावित क्षेत्र जिसे नक्सल हमलों की वजह से देश-दुनिया पहचानती थी, कभी अपनी पहचान बदल पाएगा, लेकिन हिंसा पर हौसले की जीत से अब यहां की तस्वीर बदलने लगी है। प्राकृतिक संसाधन और हुनर से भरपूर दंतेवाड़ा जिले का खुद के नाम का 'दंतेवाड़ा नेक्स्ट' यानी डेनेक्स ब्रांड अब ग्लोबल पहचान बना चुका है। राज्य सरकार की मदद से यहां इतनी बड़ी गारमेंट फैक्ट्री संचालित की जा रही है, जितनी बड़ी फैक्ट्री राजधानी रायपुर में भी नहीं। यहां से स्थानीय महिलाओं द्वारा तैयार उच्च गुणवत्ता के जैकेट, शर्ट, कुर्ता सहित विभिन्न प्रकार के रेडीमेड कपड़े अब दूर-दूर तक निर्यात होने लगे हैं। यह बदलते दंतेवाड़ा का ही आगाज़ है कि इस फैक्ट्री से 7 महीने में ही 7 करोड़ 65 लाख रूपये के एक लाख 27 हजार रेडीमेड गारमेंट की सप्लाई की जा चुकी है।

इसके साथ ही वनोपजों का वैल्यू एडीशन कर उसे डेनेक्स ब्रांड से बेचने की शुरूआत की गयी है। इसी कड़ी में दंतेवाड़ा का सफेद आमचूर डेनेक्स ब्रांड से तैयार किया गया है। पहले जहां व्यापारी दंतेवाड़ा का आमचूर सस्ते में खरीद कर ले जाते थे, वह वेल्यूएडिशन के बाद अच्छी कीमत में बिकने लगा है। दंतेवाड़ा को गारमेंट हब बनाने की शुरूआत छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा गीदम विकासखण्ड के ग्राम हारम में डेनेक्स नवा दंतेवाड़ा गारमेंट फैक्टरी के माध्यम से स्थानीय लोगों को रोजगार मुहैय्या कराने के इरादे से हुई। इसका उद्देश्य सिर्फ इंन्फ्रास्ट्रक्चर खड़ा करना न होकर लोगों तक आजीविका

का साधन पहुंचाकर उनके जीवन स्तर में सुधार लाना है। इसके लिए 1.92 करोड़ रू. की टेक्सटाईल यूनिट 5 एकड़ की भूमि पर लगाई गई है। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के करकमलों से 31 जनवरी 2021 को फैक्ट्री के शुभारंभ के साथ ब्रांडेड गारमेंट व्यवसाय की शुरूआत हुई। स्थानीय महिलाओं को प्रशिक्षण देकर गारमेंट फैक्ट्री में रोजगार दिया गया। उत्पादों के बिक्री के लिए ट्राईफेड, सीआरपीएफ, एनएमडीसी के साथ एमओयू (अनुबंध) किया गया है। इनके आउटलेट से डेनेक्स ब्रांड के कपड़े बिकने लगे हैं,जिससे बिक्री के लिए अच्छा मार्केट मिला

'डेनेक्स' गारमेंट ब्रांड से मिली ग्लोबल पहचान

महिलाओं को रोजगार से मिला नया आत्मविश्वास, 500 से अधिक परिवारों को मिला सहारा

और डेनेक्स ब्राण्ड देश-विदेश पहुंचाने लगा है।

बिहान महिला समूहों द्वारा संचालित इस फैक्ट्री से करीब 400 स्थानीय परिवारों को रोजगार मिला है। इस भव्य फैक्ट्री में कार्यरत लोगों के लिए प्रशिक्षण रूम, किचन, डाइनिंग रूम, रेस्ट रूम, प्राथमिक उपचार केन्द्र, बच्चों के खेलने के लिए रूम, गार्डन, शौचालय तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल की घोषणा अनुरूप दंतेवाड़ा गारमेण्ट फैक्ट्री के कार्यों को बढ़ाते हुए 20 जून से एक करोड़ 8 लाख रूपए की लागत से निर्मित दंतेवाड़ा गारमेण्ट फैक्ट्री की यूनिट-2 बारसूर का शुभारंभ भी कर दिया गया है। यहां अभी 150 परिवारों को रोजगार दिया गया है, जिसे 300 परिवारों तक बढ़ाने का लक्ष्य है। सरकार की योजना भविष्य में दंतेवाड़ा और बचेली में भी यूनिट स्थापित करने की है जिससे अधिक से अधिक परिवारों को रोजगार दिया जा सके। इसके साथ ही महिलाओं को वित्तीय बचत का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है जिससे महिलाएं सही जगह पैसे इन्वेस्ट कर अपनी आर्थिक स्थिति को और बेहतर बना सकें।

दंतेवाड़ा जिले में रहने वाली श्रीमती अंजू यादव को ट्रेनिंग के बाद जब काम मिला तब वे बहुत खुश नजर आईं और उन्होंने बताया कि वह पहले घर पर ही सिलाई का कार्य करती थी पर महीने में मात्र 2 हजार ही बड़ी मुश्किल से कमा पाती थी पर अब फैक्ट्री खुलने से उन्हें हर महिने 7 हजार रूपये की आमदनी हो रही है।

कोरोना संभला तो प्रदेश में टीबी का टेंशन

छत्तीसगढ़ इस बीमारी की रोकथाम में पिछड़ गया; स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव ने कहा- कोविड टेस्ट में लगी ट्रू नॉट मशीनों से फिर शुरू करेंगे जांच

रायपुर । कोरोना महामारी के भीषण प्रहार से प्रदेश में टीबी की जांच और इलाज के तंत्र को बिगाड़ दिया है। स्वास्थ्य विभाग अब कोरोना जांच में लगी ट्रू नॉट मशीनों को फिर से टीबी की जांच में लगाएगा। हर जिले में कम से 2 मशीनों का उपयोग केवल टीबी की जांच के लिए होगा। यह जानकारी स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव ने दी है। सिंहदेव आज राजधानी के चिप्स मुख्यालय स्थित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग हॉल में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया के साथ वर्चुअल बैठक में शामिल थे। वहां उन्होंने बताया, छत्तीसगढ़ में टीबी रोकथाम की स्थिति निर्धारित लक्ष्य की तुलना में अच्छी नहीं है। कोरोना संक्रमण की

वजह से हमारी गतिविधियां प्रभावित हुई हैं। वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ में पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर मिलाकर टीबी के 18 हजार 233 एक्टिव केस हैं। निजी क्षेत्र में इनकी संख्या 3 हजार 919 है। अभी इन्हें अपडेट करने की जरूरत पड़ सकती है। स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव ने कहा, हमारे पास 160 ट्रूनॉट मशीन है। इसे बड़े पैमाने पर हमने कोरोना वायरस की जांच में लगाया है। अब कम से कम हर जिले में औसतन दो मशीनें टीबी की जांच के लिए उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। सिंहदेव ने बताया, हमने प्लान किया है कि छत्तीसगढ़ में दो टीबी सर्वाइवर को चिन्हित कर उनको एंबेसडर या प्रेरक बनाया जाएगा, ताकि बीमारी और इलाज के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाई जा सके।

स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रजेंटेशन में पिछड़ा दिखा प्रदेश

टीबी की स्थिति पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक प्रजेंटेशन सामने रखा। इसमें बताया गया, जनवरी 2021 से जुलाई 2021 तक टीबी पर नियंत्रण पाने का जो लक्ष्य तय हुआ था उसमें छत्तीसगढ़ केवल 50त्न हासिल कर पाया। वहीं राष्ट्रीय औसत 67त्न तक का है। टीबी के उपचार के लिए 90त्न की लक्ष्य सीमा निर्धारित की गई थी, जिसमें राष्ट्रीय औसत 81त्न प्राप्त की है और छत्तीसगढ़ 83त्न पर रहा है। पोषण योजना के क्रियान्वयन में राष्ट्रीय औसत 57त्न और छत्तीसगढ़ का प्रदर्शन 49त्न पर रहा है।

नहीं खाते तोरई तो आज से ही खाना कर दें शुरू, एक साथ कई बीमारियों से करेगी बचाव

अगर आप तोरई को देखकर ही खाना छोड़ देते हैं तो ये खबर पढ़ने के बाद हो सकता है कि तोरई के फायदे जानकर आपका मन बदल जाए। जानिए तोरई को खाने से सेहत को क्या फायदा होता है।

नहीं खाते तोरई तो आज से ही खाना कर दें शुरू, एक साथ कई बीमारियों से करेगी बचाव

कुछ सब्जियां ऐसी होती हैं जो सेहत के लिए बेहतरीन होती हैं लेकिन उनका नाम सुनते ही लोग नाक मुंह बनाने लगते हैं। ऐसी ही एक सब्जी तोरई है। तोरई आपको बाजार में हर मौसम में मिल जाएगी लेकिन स्वाद में ये आपको इसी मौसम में बेहतरीन लगेगी। इसमें विटामिन सी के अलावा कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फाइबर और विटामिन बी कॉम्पलेक्स होता है। ऐसे में अगर आप तोरई को देखकर ही खाना छोड़ देते हैं तो ये खबर पढ़ने के बाद हो सकता है कि तोरई के फायदे जानकर आपका मन बदल जाए। जानिए तोरई को खाने से सेहत को क्या फायदा होता है।

डायबिटीज करेगा कंट्रोल

बहुत ही कम लोग इस बात को जानते होंगे कि तोरई का सेवन करना शुगर पेशेंट के लिए लाभकारी होता है। इसमें पेप्टाइड और एल्कलॉइड तत्व होते हैं। ये दोनों मेटाबॉलिज्म को बढ़ाने में मदद करते हैं। जिससे कि इंसुलिन की मात्रा नियंत्रित करने में मदद मिलती है। ऐसे में शुगर पेशेंट इसे अपनी डाइट में जरूर शामिल करें।

वजन नियंत्रित करने में करेगा मदद

क्या आप जानते हैं तोरई वजन को कंट्रोल करने में भी आपकी मदद करती है। दरअसल, तोरई का सेवन करने से पेट लंबे वक्त तक भरा रहता है। जिससे कि वजन बढ़ने की समस्या से आराम मिलता है।

आंखों के लिए फायदेमंद

तोरई का सेवन करना आपकी आंखों के लिए भी फायदेमंद होता है। ये आंखों की रोशनी बढ़ाने में आपकी मदद करती है। इसके साथ ही इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन ए के अलावा ए, बी,सी और पोषक तत्व होते हैं।

लिवर को करता है क्लीन

तोरई का सेवन करने से लिवर को डिटॉक्स करने में मदद मिलती है। ये आपके शरीर में मौजूद गंदगी को बाहर निकालने में सहायता करती है। जिस वजह से शरीर का बीमारियों की चपेट में आने का खतरा काफी कम हो जाता है।

बूस्ट करती है इम्यूनिटी

कोरोना काल में शरीर की इम्यूनिटी का मजबूत होना बहुत जरूरी है। ऐसे में आप अपनी डाइट में तोरई को जरूर शामिल करें। तोरई कई पोषक तत्वों के अलावा एंटी ऑक्सीडेंट्स से भरपूर होती है। जो कि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में आपकी मदद करता है।

40 की उम्र के पुरुष शारीरिक कमजोरी को दूर करने के लिए डाइट में शामिल करें ये 3 चीजें, जानें सेवन का तरीका

अगर आप 40 की उम्र के हैं और शारीरिक कमजोरी की समस्या से जूझ रहे हैं तो डाइट में इन 3 चीजों को शामिल करें। इससे आपको फायदा होगा।

पुरुषों में एक उम्र के बाद कई तरह की दिक्कतें सेहत संबंधी हो सकती हैं। इन दिक्कतों में सबसे आम परेशानी है शारीरिक कमजोरी का होना। पुरुषों में आई शारीरिक कमजोरी कई वजह से हो सकती है। जैसे कि खान पान पर ध्यान ना देना या फिर उनकी दिनचर्या का गड़बड़ाना। अगर आप 40 की उम्र के हैं और शारीरिक कमजोरी की समस्या से जूझ रहे हैं तो डाइट में इन 3 चीजों को शामिल करें। इससे आपको फायदा होगा।

डायबिटीज पेशेंट के लिए 2 तरह से असरदार है मेथी का सेवन, कंट्रोल में रहेगा ब्लड शुगर लेवल

डाइट में इन 3 चीजों को करें शामिल

40 की उम्र के अगर आप हैं और शारीरिक कमजोरी की समस्या से जूझ रहे हैं तो डाइट में 3 चीजों को शामिल करने से आपको फायदा हो सकता है। ये तीन चीजें हैं...

छुहारा

मखाना

दूध

milk

इस तरह करें इनका सेवन

सबसे पहले आप कम से कम 2 से 3 घंटे तक छुहारे और मखानों को पानी में भिगोकर रख दें। आप 2 छुहारे और करीब 4 से 5 मखाने लें। उसके बाद एक गिलास दूध लें और उसे मिक्सी ग्राइंडर में डाल दें। अब इसमें छुहारे और मखाने जो आपने पानी में भिगोए थे उन्हें निचोड़ कर इसमें डाल दें। यहां पर आप इस बात का ध्यान रखें कि छुहारे के अंदर की गुठली को निकाल दें। मिक्सी ग्राइंडर को चलाएं। अब इस ड्रिंक को गिलास में करें और रोजाना पीएं। इससे आपको कुछ दिनों में फायदा हो सकता है।

शरीर में आई हीमोग्लोबिन की कमी को दूर करेंगी ये 5 चीजें, आज से ही डाइट में करें शामिल

जानें ये घरेलू नुस्खा कैसे है असरदार

शारीरिक कमजोरी को दूर करने के लिए ये घरेलू नुस्खा असरदार है। ऐसा इसलिए क्योंकि छुहारे और मखाने दोनों में टेस्टोस्टेरोन नाम के हार्मोन को बढ़ाने का गुण पाया जाता है। ये पुरुषों की सेहत पर असर डालता है। जबकि दूध का सेवन करने से ताकत बढ़ती है।

डाइजेशन भी अच्छा रहता है

अगर किसी व्यक्ति को डाइजेशन की दिक्कत है तो वो भी इस ड्रिंक का सेवन कर सकता है। इसमें प्रचुर मात्रा में फाइबर होता है जो कि डाइजेशन को सुधारने में सहायता करता है।

पाटन विकासखंड के झीट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में बनेगा ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाई

स्वास्थ्य मंत्री की मौजूदगी में एम.आर.एच.आर.यू. के लिए सीजीएमएससी और आईसीएमआर के बीच एमओयू

बीमारियों की जांच, सर्विलेंस, अनुसंधान और तकनीकी स्टॉफ के प्रशिक्षण में मिलेगी मदद

रायपुर । दुर्ग जिले के पाटन विकासखंड के झीट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मॉडल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाई (MRHRU – Model Rural Health Research Unit) स्थापित की जाएगी। स्वास्थ्य मंत्री श्री टी.एस. सिंहदेव की मौजूदगी में आज उनके निवास कार्यालय में सीजीएमएससी (CGMSC – Chhattisgarh Medical Services Corporation) और आईसीएमआर (ICMR – Indian Council for Medical Reseach) के बीच इसके निर्माण के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। छत्तीसगढ़ शासन की ओर से सीजीएमएससी के प्रबंध संचालक श्री कार्तिकेय गोयल और आईसीएमआर की ओर से राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान जबलपुर के निदेशक डॉ. अपरूप दास ने अनुबंध पत्र पर हस्ताक्षर किए।

राज्य शासन के सीजीएमएससी द्वारा आईसीएमआर की संस्था राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान जबलपुर के सहयोग से झीट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में दो करोड़ रूपए की लागत से 11 हजार वर्गफीट में मॉडल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाई की स्थापना की जाएगी। स्वास्थ्य मंत्री श्री सिंहदेव ने एमओयू के मौके पर कहा कि एम.आर.एच.आर.यू. से प्रदेश में विभिन्न बीमारियों की जांच, अनुसंधान, सर्विलेंस और बीमारियों के पूर्वानुमान में मदद मिलेगी। यहां के वैज्ञानिकों, चिकित्सा वैज्ञानिकों एवं वरिष्ठ तकनीकी स्टॉफ द्वारा स्वास्थ्य विभाग और अस्पतालों की लेबोरेटरी में कार्यरत तकनीशियनों तथा पैरामेडिकल स्टॉफ को प्रशिक्षण भी दिया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान में वेक्टरजनित बीमारियों के परीक्षण के लिए नमूना जबलपुर एवं अन्य संस्थानों में भेजा जाता है। झीट में ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाई की स्थापना से स्थानीय स्तर पर ही इस तरह के परीक्षण और अनुसंधान की सुविधा मिलेगी। श्री सिंहदेव ने ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाई के निर्माण में सहयोग के लिए आईसीएमआर को धन्यवाद दिया। उन्होंने सीजीएमएससी को शुभकामना देते हुए इसका निर्माण तेजी से पूर्ण करने कहा।

एम.आर.एच.आर.यू. के लिए सीजीएमएससी और आईसीएमआर के बीच एमओयू के दौरान अनुसंधान परामर्श समिति के अध्यक्ष डॉ. अरविंद नेरल, सीजीएमएससी के महाप्रबंधक श्री सुनील कुमार सिंह, कार्यकारी अभियंता श्री निशांत सूर, राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान जबलपुर के वैज्ञानिक डॉ. राजीव यादव और डॉ. रवीन्द्र कुमार तथा प्रशासनिक अधिकारी डॉ. आर.के. ठाकुर भी मौजूद थे।

श्री सत्य साईं बाबा ने संसार को मानवता का संदेश दिया: सुश्री उइके

रायपुर । राज्यपाल सुश्री अनुसुईया उइके ने श्री सत्य साईं संजीवनी हॉस्पिटल में मातृ एवं बाल देखभाल केन्द्र ''ममत्व'' का उद्घाटन किया। उन्होंने इस अवसर पर वहां भर्ती गर्भवती माताओं, हृदय रोग से स्वस्थ हुए बच्चों और उनके परिजनों से मुलाकात की और उन बच्चों के स्वस्थ जीवन और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। राज्यपाल परिसर में स्थित हनुमान मंदिर के प्राण-प्रतिष्ठा में शामिल हुई। उन्होंने श्री सत्य साईं बाबा को नमन किया तथा अस्पताल का अवलोकन किया। साथ ही अस्पताल में भर्ती गर्भवती माताओं से मुलाकात की। राज्यपाल इस अवसर पर गोद भराई की रस्म में शामिल भी हुई और माताओं के सुरक्षित मातृत्व के लिए शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि श्री सत्य साईं बाबा ने संसार को मानवता का संदेश दिया है। उनका मानना था कि ईश्वर से प्रेम करने का श्रेष्ठ रास्ता है सबसे प्रेम करें और सबकी सेवा करें। वे मानव सेवा को सर्वोपरि मानते थे। यह अस्पताल उनकी इसी अवधारणा पर कार्य कर रहा है। राज्यपाल ने रामायण के प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री हनुमान ने भगवान श्रीराम के भ्राता लक्ष्मण के युद्ध में घायल होने पर संजीवनी बूटी से प्राणों की रक्षा

की थी। उन्होंने बूटी लाने के लिए पूरे पहाड़ को ही साथ ले आए थे। इसी तरह यह हॉस्पिटल आम जनों को संजीवनी देने का कार्य कर रहा है। संजीवनी अस्पताल से बच्चों के हृदय रोग का इलाज नि:शुल्क होता है, जिससे उन्हें नवजीवन मिलता है। राज्यपाल ने कहा कि आज से करीब पांच महीने पहले इस मातृ एवं बाल देखभाल केन्द्र का शिलान्यास हुआ था, परन्तु कोरोना काल और बारिश के बावजूद इतने न्यूनतम समय में अस्पताल का तैयार होना एक बड़ी उपलब्धि है। इसके लिए उन्होंने श्री सत्य साईं हेल्थ एवं एजुकेशन ट्रस्ट के चेयरमेन श्री सी. श्रीनिवास तथा पूरे प्रबंधन को बधाई दी। राज्यपाल ने कहा कि श्री सत्य साईं बाबा ने पूरे संसार को प्रेम, दया और

मानवता का संदेश दिया है। वे एक तरह से राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के तौर पर भी स्वीकार किए जाते हैं। उनका मानना था कि विभिन्न मतों को मानने वाले अपने-अपने धर्म को मानते हुए अच्छा मानव बनें। राज्यपाल ने कहा कि मुझे खुशी है कि मदर एंड चाईल्ड केयर सेंटर 'स्वस्थ मां और स्वस्थ बच्चे' की अवधारणा पर प्रारंभ किया जा रहा है। इस केन्द्र के प्रारंभ होने से प्रदेश में मां और बच्चों के इलाज की अच्छी सुविधा मिलेगी। गर्भवती माताओं का नि:शुल्क इलाज होगा तथा डिलीवरी भी मुफ्त होगी। इससे निर्धन वर्ग की जनता को बहुत मदद मिलेगी, गर्भावस्था के समय मां की देखभाल से स्वस्थ बच्चे का जन्म होगा। साथ ही कुपोषण की दर में भी कमी होगी।

छत्तीसगढ़ में सुपोषण और उसकी चुनौतियों पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित

विशेषज्ञों के अनुभव और सुझावों से बनेगी सुपोषित छत्तीसगढ़ की बेहतर कार्ययोजना : मंत्री भेंड़िया

रायपुर । महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अनिला भेंड़िया ने कहा है कि सुपोषण की स्थिति में छत्तीसगढ़ पूरे देश में कई मापदंड़ों में आगे हैं। कमजोर मापदंड़ों को सुधार ले तो निश्चित रूप से हमारा प्रदेश पूरे देश में अव्वल हो जाएगा।

मैदानी अधिकारी पंचायती राज संस्थाओं, जनप्रतिनिधियों के सहयोग से अपने क्षेत्रों में नियमित ग्राम सभा का आयोजन कर लोगों को पोषण से जोड़े। यह सुपोषित छत्तीसगढ़ के लक्ष्य को आसान बनाएगा। छत्तीसगढ़ में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध स्थानीय पोषक आहार का उपयोग आंगनबाड़ियों में बच्चों और महिलाओं से कुपोषण दूर करने में महत्वूपर्ण भूमिका निभा रहा है। वह राष्ट्रीय पोषण माह के अवसर पर आज 13 सितम्बर को रायपुर के सिविल लाईन स्थित न्यू सर्किट हाउस में 'सुपोषित छत्तीसगढ़-परिदृश्य एवं चुनौतिया' विषय पर आयोजित राज्य स्तरीय संगोष्ठी को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार छत्तीसगढ़ से कुपोषण मुक्ति के लिए संकल्पित है और

निरंतर प्रयास कर रही है। इसके लिए सुदूर पहुंच विहीन क्षेत्रों तक आंगनबाड़ी सहिकाओं और कार्यकर्ताओं की मदद से सूखा राशन, गरम भोजन और रेडी-टू-ईट हितग्राहियों तक पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने कोरोना काल में जनजागरूकता और घर-घर जाकर पोषण आहार वितरण के लिए मैदानी अमले को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि संभावित तीसरी लहर लोगों और बच्चों तक न पहुंचे इसके लिए टीकाकरण के लिए लोगों को जागरूक करें। श्रीमती भेंड़िया में कहा कि संगोष्ठी में कई संस्थाओं से जुड़े बुद्धिजीवियों के अनुभव, सुझाव और विचारों का लाभ लेकर विभाग छत्तीसगढ़ को सुपोषित बनाने के लिए बेहतर कार्ययोजना बना सकेगा, जो निश्चित ही महिलाओं और बच्चों के लिए वरदान साबित होगा।

इस अवसर पर श्रीमती भेंड़िया ने जिला कार्यक्रम अधिकारी जशपुर, सूरजपुर और बिलासपुर को पोषण ट्रेकर एप में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए प्रशस्ती पत्र और मेडल से सम्मानित किया। उन्होंने उत्कृष्ट पोषण वाटिका के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को भी पुरस्कृत किया। साथ ही विभाग के स्वेच्छिक संगठनों यूनिसेफ, वर्ल्ड विजन इंडिया, न्यूट्रिशन इन्टरनेशनल, एविडेन्स एक्शन, सेन्टर फॉर लार्निंग रिसोर्सेस छत्तीसगढ़, द अन्तरा फाउंडेशन के प्रतिनिधियों को भी सम्मानित किया गया। साथ ही उन्होंने पोषण प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया, जिसमें स्थानीय पौष्टिक आहार और भाजियों की विविधता दिखाई दी।

पोषण माह 2021 : छत्तीसगढ़ को कुपोषण मुक्त बनाने हर व्यक्ति, परिवार, समाज, संगठन का सहयोग जरूरी - मंत्री भेंड़िया

रायपुर । महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अनिला भेंड़िया की अगुवाई में 'गढ़बो नवा सुपाषित छत्तीसगढ़' के संकल्प के साथ शनिवार को राजधानी रायपुर के तेलीबांधा स्थित मरीन ड्राइव से विशाल साइकिल रैली निकली। रैली में छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ.किरणमयी नायक, रायपुर नगर पालिक निगम के सभापति श्री प्रमोद दुबे, महिला एवं बाल विकास विभाग की सचिव श्रीमती रीना बाबा साहेब कंगाले, संचालक श्रीमती दिव्या उमेश मिश्रा,यूनिसेफ के स्टेट हेड श्री जॉब जकारिया सहित राष्ट्रीय सेवा योजना, छत्तीसगढ़ साइकिल क्लब, सहित विभिन्न स्वयं सेवी संगठनों के प्रतिनिधि, विभागीय अधिकारी कर्मचारी और बड़ी संख्या में युवा शामिल हुए। पोषण माह के अवसर पर छत्तीसगढ़ को कुपोषण-एनीमिया से मुक्त बनाने,लोगों में सुपोषण के प्रति जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन लाने के उद्देश्य से महिला एवं बाल विकास विभाग और सहयोगियों द्वारा साइकिल साइकिल रैली का आयोजन किया गया था। श्रीमती भेंड़िया ने कहा कि पूरे देश सहित छत्तीसगढ़ में कुपोषण के प्रति जन-जन तक जागरूकता फैलाने पोषण माह का आयोजन किया जा रहा है। लोगों की जागरूकता के लिए आयोजित यह रैली छोटी है पर

इसका संकल्प बहुत बड़ा है। छत्तीसगढ़ में बच्चों से कुपोषण और महिलाओं से एनीमिया दूर करने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेश बधेल की पहल पर शुरू हुआ मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान पूरे देश में उदाहरण है। बहुत खुशी और गर्व की बात है कि इस अभियान के कारण छत्तीसगढ़ में हर साल बड़ी संख्या में बच्चे कुपोषण से मुक्त हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि कुपोषण मुक्ति हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। सभी प्रतिज्ञा ले कि हर व्यक्ति, परिवार, संस्था और समाज को इस कुपोषण मुक्ति के अभियान से जोड़ेंगे। जन-जन तक कुपोषण मुक्ति की आवाज पहुंचे, जिससे देश से कुपोषण और एनीमिया से ग्रसित नौनिहाल और महिलाओं से कुपोषण दूर हो सके।

छत्तीसगढ़ बनेगा देश का मिलेट हब - भूपेश बघेल

आई.आई.एम.आर. किसानों को देगा तकनीकी जानकारी, उच्च क्वालिटी के बीज, सीड बैंक की स्थापना में मदद और प्रशिक्षण

रायपुर । मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने कहा है कि छत्तीसगढ़ आने वाले समय में देश का मिलेट हब बनेगा। उन्होंने कहा कि मिलेट मिशन के तहत किसानों को लघु धान्य फसलों की सही कीमत दिलाने आदान सहायता देने, खरीदी की व्यवस्था, प्रोसेसिंग और विशेषज्ञों की विशेषज्ञता का लाभ दिलाने की पहल की है। हम लघु वनोपजों की तरह लघु धान्य फसलों को भी छत्तीसगढ़ की ताकत बनाना चाहते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल आज अपने निवास कार्यालय में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च हैदराबाद और राज्य के मिलेट मिशन के अंतर्गत आने वाले 14 जिलों कांकेर, कोण्डागांव, बस्तर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा, नारायणपुर, राजनांदगांव, कवर्धा, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही, बलरामपुर, कोरिया, सूरजपुर और जशपुर के कलेक्टरों के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। एमओयू के अंतर्गत इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च हैदराबाद छत्तीसगढ़ में कोदो, कुटकी एवं रागी की उत्पादकता बढ़ाने, तकनीकी जानकारी, उच्च क्वालिटी के बीज की उपलब्धता और सीड बैंक की स्थापना के लिए सहयोग और मार्गदर्शन देगा। इसके अलावा आईआईएमआर हैदराबाद द्वारा मिलेट उत्पादन के जुड़ी राष्ट्रीय स्तर पर विकसित की गई वैज्ञानिक तकनीक का मैदानी स्तर पर प्रसार हेतु छत्तीसगढ़ के किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाएगी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री निवास में वन एवं

जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री मोहम्मद अकबर, उद्योग मंत्री श्री कवासी लखमा, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव श्री सुब्रत साहू, कृषि उत्पादन आयुक्त डॉ. एम.गीता, छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ के प्रबंध संचालक श्री संजय शुक्ला, उद्योग विभाग के सचिव श्री आशीष भट्ट, संचालक उद्योग श्री अनिल टुटेजा उपस्थित थे। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च के डायरेक्टर डॉ. विलास ए.तोनापी और मुख्य वैज्ञानिक डॉ. दयाकर राव तथा 14 जिलों के कलेक्टर कार्यक्रम से ऑनलाइन जुड़े।

देश-विदेश में कोदो-कुटकी, रागी जैसे मिलेट की बढ़ती मांग को देखते हुए मिलेट मिशन से वनांचल और आदिवासी क्षेत्र के किसानों की न केवल आमदनी बढ़ेगी, बल्कि छत्तीसगढ़ को एक नई पहचान मिलेगी। वहीं मिलेट्स के प्रसंस्करण और वेल्यूएडिशन से किसानों, महिला समूहों और युवाओं को रोजगार भी मिलेगा। छत्तीसगढ़ के 20 जिलों में कोदो-कुटकी, रागी का उत्पादन होता है। प्रथम चरण में इनमें से 14 जिलों के साथ एमओयू किया गया। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने इस अवसर पर कहा कि कोदो, कुटकी और रागी जैसी लघु धान्य फसलें ज्यादातर हमारे वनक्षेत्रों में बोई जाती हैं। कोदो, कुटकी और रागी जैसी फसलें पोषण से भरपूर हैं। देश में इनकी अच्छी मांग है। शहरी क्षेत्रों में बहुत अच्छी कीमत पर ये बिकती हैं। लेकिन छत्तीसगढ़ में पैदा होने वाली कोदो, कुटकी और रागी वनांचल से बाहर निकल ही नहीं पाई है।

रायपुर में ओपीडी और आईपीडी की सुविधा फ्री

सरकारी अस्पतालों में पर्चा बनवाने नहीं देनी होगी 10 रुपए फीस

आयुष्मान या राशन कार्ड रखने वालों को मिलेगा फायदा

रायपुर । राज्य सरकार ने राजधानी रायपुर के सरकारी अस्पतालों में OPD (आउट पेशेंट डिपार्टमेंट) और IPD (इन पेशेंट डिपार्टमेंट) सुविधा को फ्री कर दिया है। आयुष्मान कार्ड अथवा राशन कार्ड रखने वाले किसी व्यक्ति को अब इलाज के लिए 10 रुपए फीस नहीं देनी होगी। मरीजों को अब केवल कुछ पैथोलॉजी जांच के लिए शुल्क अदा करना होगा।

अधिकारियों ने बताया, स्वास्थ्य विभाग के पोर्टल से ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराकर किसी भी सरकारी स्वास्थ्य केंद्र में फ्री इलाज कराया जा सकता है। स्वास्थ्य विभाग ने रायपुर के शहरी स्वास्थ्य केंद्रों में यह योजना पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू की है। अगर यह प्रयोग सफल रह तो इसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी इसे लागू किया जाएगा। वहां भी कोई दिक्कत पेश नहीं

आई तो फिर पूरे प्रदेश में लागू करने की योजना है। फिलहाल शहरी क्षेत्र के 14 लाख से अधिक लोगों को इस योजना का फायदा मिल सकता है।

रायपुर के इन अस्पतालों में यह सुविधा

डॉ. भीमराव आंबेडकर अस्पताल, जिला अस्पताल पंडरी, आयुर्वेदिक हॉस्पिटल, जच्चा-बच्चा केंद्र कालीबाड़ी, डीडी नगर, हीरापुर, गोगांव, भनपुरी, गुढ़ियारी, राजातालाब, मोवा, आमासिवनी, कचना, लाभांडी, बोरियाकला, देवपुरी, कांशीराम नगर, मठपुरैना, भाठागांव, चंगोराभाठा, खोखोपारा और रामनगर। इन केंद्रों में रोजाना चार हजार 500 से ज्यादा मरीज इलाज कराने के लिए पहुंचते हैं।

ऑनलाइन पंजीयन प्रणाली ने काम करना शुरू किया

सरकारी अस्पतालों में ऑनलाइन पंजीयन प्रणाली ने काम करना शुरू कर दिया है। पहले से पंजीकृत मरीजों के मोबाइल नंबर बताते ही तुरंत OPD पर्ची मुहैया हो गई। रायपुर जिला अस्पताल में कुछ देर के लिए पोर्टल में तकनीकी वजहों से थोड़ी दिक्कत हुई, लेकिन थोड़ी देर में यह ठीक कर लिया गया। अधिकारियों ने बताया, दूसरे केंद्रों से ऐसी कोई शिकायत नहीं आई है।

बदलाव के लिए करें खुद को तैयार

नौकरी के दौरान अक्सर एक जैसा काम करते हुए हम ऐसी स्थिति में आ जाते हैं, जिसमें जरा-सा बदलाव भी हमें असहज कर देता है। नौकरी के दौरान अक्सर एक जैसा काम करते हुए हम ऐसी स्थिति में आ जाते हैं, जिसमें जरा-सा बदलाव भी हमें असहज कर देता है। लगातार सुविधापूर्ण स्थिति में आत्ममुग्ध रहना एक तरह से 'असुविधा'' को ही दावत देना है। अगर आप भी कंफर्ट जोन में खुद को 'कंफर्टेबल' मानकर चल रहे हैं, तो वक्त रहते संभल जाएं और ऐसा करके ही आप खुद को हर परिस्थिति में कॉन्फिडेंट रख सकेंगे।

सदाशिव पढ़ाई में अच्छे हैं। दिखने में समझदार। नौकरी जल्द शुरू कर दी थी। कुछ ही साल में अपनी पहचान भी बना ली और एक वरिष्ठ अधिकारी के लिए अलग से काम करके उनका विश्वास भी हासिल कर लिया। इसका उन्हें फायदा भी मिलता रहा। पद और प्रतिष्ठा तो मिली ही, कई बार विदेश जाने का अवसर भी मिला। मगर कई साल ऐसे ही बीतने के कारण सदाशिव आत्ममुग्धता के शिकार होते चले गए। प्रभावशाली अधिकारी का संरक्षण मिला होने के कारण वे खुद को बेहद सुरक्षित महसूस करने लगे। इस बीच उन्हें कई प्रोजेक्ट मिले, पर भरपूर अवसर मिलने के बावजूद किसी में खास प्रभाव छोड़ न पाने के कारण अंतत: वे अपने मूल विभाग में ही बने रहे। यहीं उनसे चूक होती चली गई। अपने मूल विभाग के बॉस से उनकी ट्यूनिंग बनने और प्रगाढ़ होने के बजाय बिगड़ती चली गई लेकिन आत्ममुग्धता और उच्चाधिकारी की शह के कारण उन्होंने इसकी ज्यादा परवाह नहीं की। विभागीय बॉस के उपेक्षापूर्ण नजरिये से ठेस लगने के बावजूद उनका स्वाभिमान नहीं जागा और वे निश्चिंतता के साथ टाइम पास करते रहे। इतना ही नहीं, सोशल साइट्स पर भी वे खूब दिखते और अपनी बेतुकी टिप्पणियों पर खुद ही खुश हो लेते। कुछ समय बाद स्थितियां करवट लेने लगीं। प्रभावशाली अधिकारी का प्रभाव जाता रहा और एक समय ऐसा भी आया, जब उनकी जगह कंपनी में कोई और आ गया। अब सदाशिव को सचेत हो जाना चाहिए था, पर ऐसा हुआ नहीं। उनका रवैया जस का तस बना रहा। वे चाहते, तो अपने विश्वासी अधिकारी के रहते किसी और विभाग या केंद्र या प्रोजेक्ट में अच्छे पद पर शिफ्ट हो सकते थे लेकिन सुविधाजीवी और एकरस जीवन के आदी हो चुके सदाशिव ने ऐसी कोई पहल नहीं की। एक दिन जब उन्हें कुछ गलतियां बताते हुए संस्थान से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया, तब उन्हें एहसास हुआ लेकिन तब उनके पास संभलने और सुधरने का मौका नहीं था।

भंवर है कंफर्ट जोन

सदाशिव की सच्ची कहानी महज एक उदाहरण है। आपको अपने संस्थान या दूसरी संस्थाओं, विभागों में ऐसे कई लोग मिल जाएंगे, जो कंफर्ट जोन में समय बिताते हुए खुश दिखेंगे। कई लोग यह भी कहते मिल जाएंगे कि अरे भाई, नौकरी तो सुरक्षित है ही, फिर काम की टेंशन में क्यों परेशान रहें! दरअसल, ऐसे लोग यह नहीं सोचते कि इस प्रकार का रवैया रखकर वे खुद के नुकसान की ही नींव रख रहे हैं। स्थितियां हमेशा एक-सी नहीं रहतीं। जो लोग काम से जी चुराते हैं, नया सीखने-जानने में दिलचस्पी नहीं रखते, कभी पहल करके कोई काम नहीं करते, कोई काम कहने पर समाधान के बजाय तमाम तरह की समस्याएं ही गिनाने बैठ जाते हैं, टीम मेंबर्स से भी जिन्हें ढेरों शिकायतें होती हैं, सही मायने में उनका करियर हमेशा दांव पर लगा होता है। ऐसे लोगों को जब कभी कोई काम सौंपा जाता है, तो वे उसमें इतना विलंब कर देते हैं या फिर उसे इतना उलझा देते हैं कि बॉस को आगे उन्हें काम न देने के बारे में सोचना पड़ जाता है। ऐसे लोग अपनी इस कथित रणनीति पर भले ही खुश होते हों पर जरा सोचें, क्या वह बॉस कभी उनकी प्रशंसा-अनुशंसा करेगा और जब कभी डिमोशन न कर दिया गया या इंक्रिमेंट रोक लिया गया या फिर छंटनी की स्थिति में उनका नाम ही आगे बढ़ा दिया गया, तो फिर क्या उन्हें संस्थान और बॉस की आलोचना का अधिकार होना चाहिए

उपयोगिता करें साबित

आप निजी कंपनी में काम कर रहे हों या फिर सरकारी सेवा में हों, छोटे पद पर हों या बड़े पद पर, अगर आप अपने पद की जरूरतों के अनुसार खुद की उपयोगिता साबित करने का प्रयास नहीं करते, तो एक-न-एक दिन आपको जरूर नुकसान हो सकता है। अगर आप समय रहते नहीं चेतते, तो फिर आप किसी को दोष भी नहीं दे सकते। आपको कोई भी जिम्मेदारी दी जाती है, उसे उत्साह के साथ पूरा करने का प्रयास करें। अगर आपको लगता है कि उसमें बॉस से और समझने की या किसी सहयोगी की मदद लेने की जरूरत है, तो विनम्रता के साथ सहयोग लें। आपके प्रयास की गंभीरता स्पष्ट नजर आनी चाहिए। अगर आप छोटे-से-छोटे काम को भी सतर्कता के साथ बहुत अच्छी तरह पूरा करते हैं, तो निश्चित रूप से इससे आपकी छवि बेहतर होगी।

हर दिन हो नया

अगर आप एकरस जीवन से बचना और खुश रहना चाहते हैं, तो अपने काम को एंजॉय करना होगा। निष्ठा ईमानदारी से काम करेंगे, तो ज्यादा कुछ मिले-न मिले, भरपूर सुकून जरूर मिलेगा। यह आपका सबसे बड़ा रिवॉर्ड होगा। इसके अलावा गलतियों से सबक लेने, कमियों को दूर करने और हमेशा कुछ नया सीखने की ललक रखेंगे, तो आपके आत्मविश्वास का स्तर ऊंचा रहेगा और आप मुश्किल से मुश्किल काम को भी उत्साह और हौसले से कर सकेंगे। इस राह पर चलकर तरक्की की सीढ़ियां भी चढ़ते जाएंगे।

इस तरह कर सकते हैं ग्रेजुएशन के बाद अमेरिका में जॉब

हाल ही में ग्रेजुएशन करने वालों के लिए अमेरिका में काम करने के लिए दो ऑप्शन हैं : ऑप्शनल प्रेक्टिकल ट्रेनिंग (ओपीटी) तथा एच1बी वीसा। ओपीटी ऐसे ताजा ग्रेजुएट्स के लिए एक कार्यक्रम है, जो अपनी पढ़ाई की फील्ड में कार्य अनुभव पाना चाहते हैं। इसके लिए दो शर्तें पूरी करना जरूरी है : पहली यह कि आपकी ओपीटी जॉब का सीधा संबंध आपकी डिग्री से होना चाहिए। मसलन, यदि आपने इलेक्ट्रिकल इंजीनियर के रूप में डिग्री ली है, तो आप शेफ के रूप में नौकरी नहीं कर सकते। दूसरी शर्त यह है कि आपने जहां से डिग्री प्राप्त की है, वहां का कोई अधिकारी ओपीटी प्रोग्राम के लिए आपका नाम प्रस्तावित करे। इसलिए यह जरूरी है कि आप जहां से पढ़ाई कर रहे हैं, उस संस्थान के संपर्क में रहें और उससे अच्छे संबंध रखें। आम तौर पर ओपीटी 1 साल के लिए ही होता है। मगर यदि आपने साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग या गणित में डिग्री ली है, तो आप ओपीटी को अतिरिक्त 17 महीनों के लिए बढ़वा सकते हैं। एच1बी वीसा ऐसे लोगों के लिए है, जो किसी स्पेशिएलिटी ऑक्युपेशन में काम करते हैं। यह एक पिटिशन-बेस्ड वीसा है, यानी आपकी ओर से आपकी कंपनी इसके लिए यूएस सिटिजनशिप एंड इमिग्रेशन सर्विसेज (यूएससीआईएस) के समक्ष आवेदन करेगी। एच1बी वीसा प्राप्त करने के लिए आपको किसी यूएस एम्बेसी या कॉन्सुलेट में इंटरव्यू के लिए आना पड़ेगा। एच1बी वीसा पर आप अमेरिका में 3 साल तक काम कर सकते हैं। इसकी अवधि बढ़वाने के विकल्प भी हैं मगर कुल मिलाकर आप एच1बी वीसा पर अमेरिका में अधिकतम 6 वर्ष तक ही काम कर सकते हैं।

पंख केवल उड़ान भरने में ही पंछियों की मदद नहीं करते। प्रकृति ने इन्हें इस तरह से बनाया है कि ये पक्षियों के लिए रेनकोट भी बनते हैं, दुश्मन से बचाव का साधन भी और हर पंछी की अपनी पहचान का माध्यम भी। साथ ही ये तापमान को नियंत्रित रखने में भी मदद करते हैं। पंखों की रचना और रंगों को देखकर मेल-फीमेल पक्षी का पता भी लगाया जा सकता है। पक्षियों के परों को अलग-अलग आकार-प्रकार के आधार पर कई श्रेणियों में बांटा जाता है।

उड़ते पंछी के परों का इंद्रधनुष

पंछियों को उड़ने के लिए पंखों का तोहफा देने वाले नेचर ने वाकई अद्भुत कारीगरी दिखाई है। आओ इन पंखों को जानें और करीब से।

पर, पर हैं क्या?

पंख, पर या फैदर्स असल में पंछियों की ऊपरी त्वचा यानी स्किन पर उगने और उसे कवर करने वाली संरचना होते हैं। साइंस की भाषा में कहा जाए तो यह एपिडर्मिस के ऊपर होने वाली ग्रोथ है। साइंस यह भी कहता है कि रेप्टाइल्स के शरीर पर पाए जाने वाले स्केल्स ही असल में पक्षियों के शरीर पर पंखों के रूप में विकसित हुए हैं। पंछियों के अलावा ये कुछ अन्य प्राणियों के शरीर पर भी पाए जाते हैं। वहां इनका रूप भी अलग हो सकता है। पंख भी नाखून और बालों की ही तरह कैराटिन नाम के प्रोटीन से बनते हैं।

उड़ो और बचो भी

पंख केवल उड़ान भरने में ही पंछियों की मदद नहीं करते। प्रकृति ने इन्हें इस तरह से बनाया है कि ये पक्षियों के लिए रेनकोट भी बनते हैं, दुश्मन से बचाव का साधन भी और हर पंछी की अपनी पहचान का माध्यम भी। साथ ही ये तापमान को नियंत्रित रखने में भी मदद करते हैं। पंखों की रचना और रंगों को देखकर मेल-फीमेल पक्षी का पता भी लगाया जा सकता है। पक्षियों के परों को अलग-अलग आकार-प्रकार के आधार पर कई श्रेणियों में बांटा जाता है।

रंगों का मजेदार विज्ञान

पंछियों के पर क्रिएटिविटी के मामले में भी प्रकृति की खूबसूरत कारीगरी होते हैं। रंग-बिरंगे इंद्रधनुष से ये पंख वाकई इंद्रधनुष सी ही काबिलियत रखते हैं। तुम्हें ये जानकर और भी आश्चर्य होगा कि फैदर्स में इंद्रधनुष के सारे रंग होते हैं। इनमें से ज्यादातर रंग एक खास पिगमेंट के कारण बनते हैं। यह क्रिया ठीक ऐसे ही होती है जैसे खाना बनाते समय फूड कलर्स को यूज करने पर होती है। जैसे कि जब तुम किसी पकवान में लाल या पीला रंग मिलाते हो तो वो लाल या पीले रंग का हो जाता है। ठीक उसी तरह पंखों में भी जिस रंग का पिगमेंट मौजूद होता है वो उसी रंग के नजर आते हैं। यहां एक रोचक बात यह है कि इंद्रधनुष के बाकी प्राइमरी कलर्स के पिगमेंट तो फैदर्स में होते हैं लेकिन नीले रंग का कोई पिगमेंट नहीं होता। तो फिर 'नीलकंठ' जैसे पंछी के पंखों का रंग कहां से आता है? इसके पीछे भी विज्ञान काम करता है। नीले रंग के मामले में प्रकृति द्वारा बनाई पंख की संरचना मुख्य काम करती है। नीले रंग के पंखों का आकार और संरचना इस तरह की होती है कि जब प्रकाश इस पर पड़ता है तब यह पंख केवल नीले रंग को ही हमारी आंखों पर रिफ्लेक्ट या परावर्तित करता है। यहां यह भी याद रखना कि साधारण प्रकाश में इंद्रधनुष के सारे रंग छुपे होते हैं लेकिन नीले पंखों की डिजाइन ऐसी होती है कि वो हमारी आंखों तक केवल नीला रंग ही पहुंचाता है।

एक्सपेरिमेंट

एक नीले रंग का पंख लेकर उस पर ऊपर की तरफ से फ्लैशलाइट डालो। इससे तुम्हें चमकता हुआ नीला रंग दिखाई देगा। अब इसी लाइट को फैदर के अंदर की तरफ से डालो। नीला रंग गायब हो जाएगा। मगर यही एक्सपेरिमेंट जब तुम लाल या पीले या अन्य किसी रंग के पंख के साथ करोगे तो तुम्हें किसी भी डायरेक्शन से सेम कलर ही दिखाई देगा। है ना ये नेचर का मैजिक।

हरे रंग का जादू

अब इसी तरह पंखों के हरे जादू को भी समझो। यहां भी रोचक बात यह है कि नेचर ने केवल एक ही पक्षी 'टरकॉइज' के पंखों में हरे रंग का पिगमेंट दिया है। तो फिर बाकी के हरे रंगों वाले पंख पंछियों के पास कैसे होते हैं? तो बाकी सारे हरे रंग के पक्षी असल में हरे रंग को दिखाने के लिए अपने पास मौजूद पीले रंग के पिगमेंट और ब्लू वेवलेंथ्स का कॉम्बीनेशन यूज में लाते हैं। अब नीले और पीले रंग को मिलाने पर हरा रंग बनता है ये सब जानते ही हैं।

बचाओ पंख और पक्षी भी

ये जाहिर सी बात है कि पंख किसी पक्षी के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। लेकिन कुछ लोग इस बात को नहीं समझते और खूबसूरत पंखों के लिए पंछियों को मार देते हैं। दुनियाभर में इसके लिए कई सारे कानून भी बनाए गए हैं ताकि निर्दोष पक्षियों को नुकसान पहुंचने से बचाया जा सके। हां, अगर जमीन पर गिरे पंख इकट्ठे करके कोई अपने पास रखे तो कोई बात नहीं।

रोचक बातें पंखों की

पंख पंछियों के नाजुक शरीर की रक्षा का काम करते हैं। कुछ पंछी तो ऐसे भी हैं जिनके नन्हे पंख उनके लिए आइलैशेज का भी काम करते हैं। उल्लू जैसे कुछ पक्षियों के पंख उनके लिए प्रोटेक्टिव शॉल का भी काम करते हैं और दुश्मनों की नजर से उन्हें पूरी तरह छुपा देते हैं। बर्फ में रहने वाले पंछियों के पैरों में भी पंख होते हैं और वे उनके लिए स्नो शूज का काम करते हैं। ये ठंड के साथ-साथ उन्हें बर्फ में ग्रिप बनाए रखने में भी मदद करते हैं। कुछ पक्षी अपने पंखों से आवाज भी करते हैं। ये आवाज पंखों से गुजरने वली हवा के कारण पैदा होती है।

महिलाओं में खुन की कमी एनीमिया :– अधिकतर महिलाएं खुन कि कमी की शिकार होती है। उम्र की हर अवस्था में खून की कमी पायी जाती है इसलिए बचपन से ही लडकियों के भोजन पर ध्यान देने कि जरूरत है।

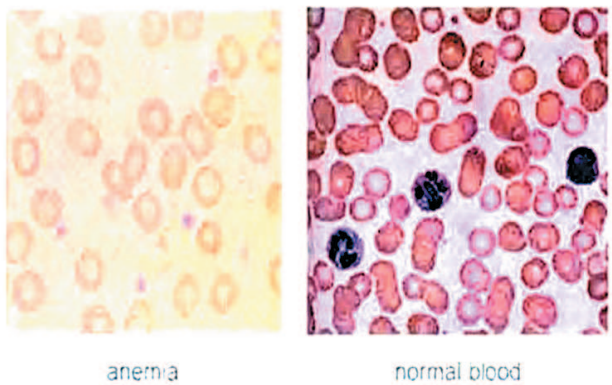

महिलाओं में खुन की कमी व कारण :– कुपोषण–गरीबी के करण पोषक तत्वो का न मिलना, लडकियों को लडकों कि तुलना मे कम खाना दिया जाना, माहवारी में ज्यादा खुन निकलने के कारण, पेट में कृमि के कारण, प्रसव या गर्भपात में अधिक खुन जाने के कारण, कुछ वंशानुगत बीमारियों के कारण जैसे सिकल सेल एनीमिया, किशोरावस्था में शरीर का विकास सबसे ज्यादा होता है क्योकि लडकियों का शरीर लडकों कि अपेक्षा जल्दी बढ़ता है, उनकी माहवारी भी शुरू हो जाती है। इन कारणों से इस उम्र में खून की कमी बढ़ जाती है। इसलिए इस उम्र पर ध्यान देने कि विशेष आवश्यकता है।

खुन की कमी, लक्षण व परेशानियां :–

ऑख की पुतली के अंदर के हिस्से में लाली की कमी,

मसूड़ों में सफेदपन,

सफेद या चपटे नाखुन,

खुन कि कमी ज्यादा होने पर, पीली या पारदर्शी चमड़ी।

परेशानियां :–

कमजोरी और थकान, सांस लेने में तकलीफ।

खुन की कमी से बचने के उपाय :– आयरन शरीर के लिए बहुत उपयोगी व होता है इसके उपयोग से गंभीर रोगों से बचा जा सकता है। इसे किशोरोवस्था में उपयोग करने कि आवश्यकता है।

लडकों के लिए – 12 MG/day

लडकियों के लिए– 18 MG/day

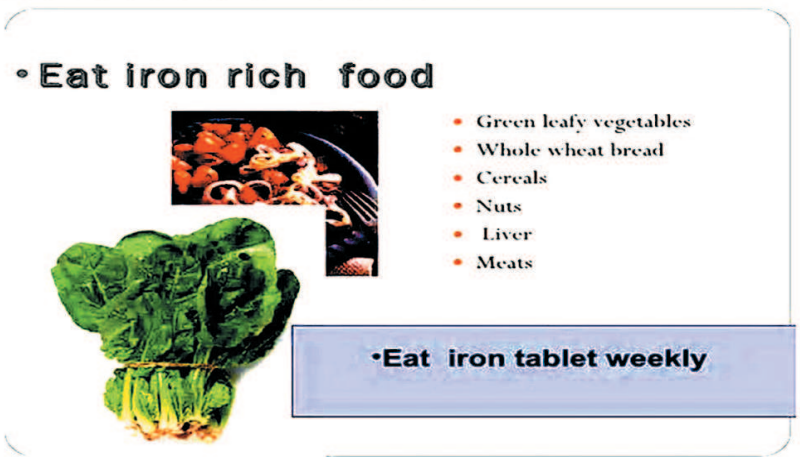

संचालक :- सहयोग :-

IMPACT INDIA FOUNDATION | TAIKI-SHA

215 वाँ लाईफलाईन एक्स्प्रेस प्रोजेक्ट
विश्रामपुर रेलवे स्टेशन
जिला- सूरजपुर (छ.ग.)

निःशुल्क स्वास्थ्य कार्यक्रम : 26 सितम्बर से 13 अक्टुबर 2021 तक

कार्यक्रम अनुसूची की विशेषता	ओ.पी.डी / पूर्व शल्य चिकित्सा	ऑपरेशन
आँख की जाँच एवं मोतियाबिन्द की सर्जरी	26 सितम्बर से 01 अक्टुबर 2021	27 सितम्बर से 02 अक्टुबर 2021
कान की जाँच एवं कान की सर्जरी	03 अक्टुबर से 06 अक्टुबर 2021	04 अक्टुबर से 07 अक्टुबर 2021
मुड़े हुए पैर का परिक्षण एवं सर्जरी 14 साल से निचे	08 अक्टुबर से 10 अक्टुबर 2021	09 अक्टुबर से 11 अक्टुबर 2021
कटे-फटे ओठ की जाँच एवं सर्जरी	08 अक्टुबर से 10 अक्टुबर 2021	09 अक्टुबर से 11 अक्टुबर 2021
दाँत की जाँच एवं उपचार	09 अक्टुबर से 13 अक्टुबर 2021	09 अक्टुबर से 13 अक्टुबर 2021
मौखिक, स्तन और ग्रीवा कैंसर जागरूकता एवं परिक्षण	26 सितम्बर से 02 अक्टुबर 2021	————

नोट :- 1. मरीज अपने साथ आधार कार्ड या अन्य पहचान - पत्र अवश्य लायें ।
2. भर्ती किये गये रोगियों के साथ केवल एक व्यक्ति को सहयोग के रुप में अनुमति दी जाएगी ।

हेल्पलाईन नम्बर – 9820303974

IMPACT INDIA FOUNDATION TAIKI-SHA

लाईफलाईन एक्सप्रेस

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक अंचल ओझा द्वारा श्री सांई बाबा ऑफसेट प्रेस, चित्रमंदिर गली, अम्बिकापुर, सरगुजा से मुद्रित तथा महुआपारा अ.पुर सरगुजा से प्रकाशित। प्रधान संपादक : अंचल ओझा